**महाप्रबंधक**
केन्द्रीय रेल विद्युतीकरण संगठन
इलाहाबाद-211001

# महाप्रबंधक का संदेश

हर्ष की बात है कि केन्द्रीय रेल विद्युतीकरण संगठन में राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार की दृष्टि से गृह पत्रिका 'विद्युत वीथिका' का 15 वां अंक प्रकाशित किया जा रहा है। पत्रिका संगठन के सभी कार्यालयों में हिन्दी का प्रचार-प्रसार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है।

मैं इस संदेश के माध्यम से कहना चाहूँगा कि हिन्दी एक ऐसी भाषा है जो देश के बड़े भू-भाग में बोली और समझी जाती है। संविधान में इसे राजभाषा का दर्जा दिया गया है और केन्द्रीय सरकार के सेवक होने के नाते हम सबका दायित्व है कि हम संवैधानिक अपेक्षाओं के अनुरूप हिन्दी में अधिक से अधिक काम करते हुए हिन्दी का प्रयोग-प्रसार बढ़ाएं।

कार्यालय में कार्य के दौरान आपसी संवाद में हिन्दी भाषा एक सेतु का कार्य करती है। अतः उच्चाधिकारी स्वयं फाइलों पर छोटे-छोटे आदेश /टिप्पणियां हिन्दी में दें तो निश्चित तौर पर अधीनस्थ अधिकारी/कर्मचारी प्रेरित होकर स्वतः काम करेंगे। इसलिए फाइलों तथा पत्राचार में सामान्य बोलचाल की मिली-जुली भाषा का का प्रयोग करें तथा निर्धारित लक्ष्य को प्राप्त करने में सहयोग करें।

'विद्युत वीथिका' के सफल प्रकाशन के लिए राजभाषा विभाग के अधिकारियों एवं कर्मचारियों को मैं बधाई देता हूँ और आशा करता हूँ कि पत्रिका अपने उद्देश्यों में पूर्ण रूप से सफल होगी।

शुभकामनाओं सहित

**(महेश मंगल)**

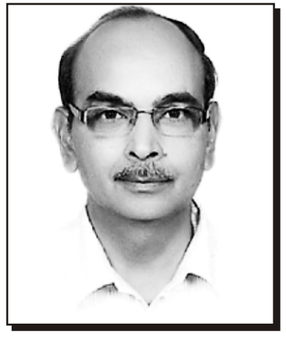

**मुख्य राजभाषा अधिकारी**
केन्द्रीय रेल विद्युतीकरण संगठन
इलाहाबाद-211001

# मुख्य राजभाषा अधिकारी का संदेश

'विद्युत वीथिका' के 15वें अंक का प्रकाशन हो रहा है, यह जानकर मुझे अति प्रसन्नता की अनुभूति हो रही है। हिन्दी भाषा एक प्रांत अथवा व्यक्ति विशेष की भाषा नहीं है, बल्कि इस पर सबका अधिकार है इसीलिए हम सबकी जिम्मेदारी बनती है कि इसके प्रचार-प्रसार के लिए अपने-अपने कार्यालयों में हिन्दी में काम करने के लिए सकारात्मक माहौल सृजित करें और हिन्दी में अधिकाधिक काम करने के लिए कर्मचारियों को प्रोत्साहित करें।

राजभाषा के प्रचार -प्रसार एवं सफल कार्यान्वयन में गृह पत्रिकाओं की अहम भूमिका होती है, क्योंकि कार्यालय में कार्यरत विविध भाषा-भाषी अधिकारियों/ कर्मचारियों को अपनी रचनात्मक प्रतिभा का विकास करने के लिए गृह पत्रिका में अवसर दिए जाते हैं। 'विद्युत वीथिका' के इस अंक में भी हमारे कर्मचारियों एवं उनके परिवार के सदस्यों की रचनाएं प्रकाशित हुई हैं। ये रचनाएं राजभाषा हिन्दी के प्रति सम्मान एवं इच्छाशक्ति को दर्शाती हैं।

पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं के रचनाकारों को मैं बधाई देता हूँ और अपेक्षा करता हूँ कि अपने दैनिक कार्यों में भी राजभाषा हिन्दी का प्रयोग करना न भूलें, क्योंकि संवैधानिक अपेक्षाओं के अनुरूप राजभाषा नियमों का अनुपालन करना हमारा दायित्व है।

शुभकामनाओं सहित

**(मुकेश कुमार गर्ग)**

# सम्पादकीय

वर्ष 2015 का सितम्बर महीना हिन्दी दिवस के अतिरिक्त एक और विशेष कारण से उल्लेखनीय रहा है- दसवें विश्व हिन्दी सम्मेलन का आयोजन । विदेशों में लगातार होने वाले इस सम्मेलन का आयोजन बाईस वर्षों बाद पुनः भारत में 10 से 12 सितम्बर तक भोपाल में किया गया। विश्व हिन्दी सम्मेलन हिन्दी की वैश्विक उपस्थिति का परिचायक तो है ही, भारतीय संघ की राजभाषा होने के कारण यह हिन्दी की राजकीय स्तर पर महत्ता और स्वीकृति का प्रतीक भी है।

ऐसे ही वातावरण में केन्द्रीय रेल विद्युतीकरण संगठन की पत्रिका ऐसे रेलकर्मी जो छोटी-छोटी रचनाओं के माध्यम से अपने भाव उजागर करना चाहते है, 'विद्युत वीथिका' उनको एक मंच उपलब्ध कराती है जिससे वे वृहद रेल परिवार तक अपनी बात पहुँचा पाने में समर्थ हो पाते हैं। उन्हें इस तरह हिन्दी में कहने सुनने लिखने की प्रेरणा मिलती है।

आज हिन्दी भारत में ही नहीं बल्कि भारत की सीमा को पार कर विश्व के कोने- कोने तक पहुँच गई है और सारे संसार में लोकप्रिय होती जा रही है। भारत के हर क्षेत्र में हिन्दी का वर्चस्व बढ़ता जा रहा है। हिन्दीतर भाषा-भाषी क्षेत्रों में भी इस भाषा को सीखने के लिए लोग स्वेच्छा से आगे आ रहे हैं। यह इस भाषा के महत्व और बढ़ती लोकप्रियता का परिचायक है। पत्रिका में विविधता, पठनीयता और रोचकता बनाए रखने का भरसक प्रयास किया गया है। चूंकि कोई भी प्रयास पूर्ण नहीं होता है, अतः पाठकों की प्रतिक्रिया का भी हमें इंतजार है ताकि पत्रिका को अधिक रुचिकर, उपयोगी और आकर्षक कलेवर दिया जा सके हम रेल कर्मियों एवं उनके परिवार के सदस्यों से इस पत्रिका के लिए रचनाएं भेजने का अनुरोध करते हैं।

सुनीता आर्य

**वरिष्ठ राजभाषा अधिकारी**

# जगदीश गुप्त का सांझ एक श्रेष्ठ मुक्तक काव्य संग्रह

**(लेख)**

**स्नेह लता**, वरिष्ठ सहायक वित्त सलाहकार

कला और साहित्य के कुशल मर्मज्ञ डॉ0 जगदीश गुप्त हिन्दी साहित्य के एक सुप्रसिद्ध हस्ताक्षर हैं। कला यदि साहित्य से जुड़ जाए तो वह निश्चय ही उन विलक्षण रचनाओं का सृजन करती है जिसकी केवल कल्पना ही की जा सकती है। अद्‌भुत विलक्षण प्रतिभा के धनी एम0ए0, डी0फिल0, चित्रकला एवं संस्कृत में डिप्लोमा, साहित्य वाचस्पति की उपाधि से विभूषित डॉ0 गुप्त ने ऐसा ही प्रयोग आधुनिक साहित्य मूर्तिकला तथा चित्रकला के समान तत्वों को लयात्मकता एवं सृजनात्मकता के संदर्भ के अन्वेषण में किया हैं।

सहृदय व्यक्ति को जब किसी रचनाकार की कृति इतनी सुन्दर लगती है कि वह उसे ही अपने मन तथा विचारों में एकाकार कर लेता है तब व्यक्ति का मानस संसार उसी रचनाकार के कृतित्व में बस जाता है। उसके विचार उन्हीं भावों में डूबने लगते हैं जिन्हें उसने अपने प्रिय कलाकार में देखा था। प्रिय के इसी विचार को आत्मसात करने की झलक उसकी अपनी कृतियों में भी दृष्टिगोचर होने लगती है। कुछ ऐसा ही विचार साम्य जगदीश गुप्त जी की 'सांझ' के रचना क्रम में प्रसाद जी की रचना 'आँसू' से प्रभावित होकर हुआ है। स्वयं उसके संदर्भ में गुप्त जी ने लिखा है कि-

मुझमें आंसू का काव्य संसार एक संस्कार बनकर कितनी गहराई से व्याप्त हो गया था यह मुझे 'सांझ' के रचनाक्रम में ज्ञात हुआ। प्रसाद जैसे कवि से एकात्मकता का साहस, वह भी पंख खोलती अनअभ्यन्त प्रतिभा के द्वारा किसी प्रारब्ध द्वारा ही संभव हो सका। लिखने के बाद मैंने उसे अपने में ऐसे सहेज लिया मानों वह एक प्रणाम है जो मैंने मानसिक प्रसाद मंदिर के आगे विवश होकर अर्पित कर दिया। मुझे रचना का सुख तो मिला पर मुझमें रचना का अहंकार जागृत नहीं हुआ । मैं इस रचना को 'आंसू' के कवि के प्रति रचनात्मक अभिनन्दन कहूँगा।

उपरोक्त प्रभाव गुप्त जी ने प्रारम्भ में व्यक्त किए है जिससे एक तथ्य स्पष्ट है कि सांझ की रचना गुप्त जी ने जयशंकर प्रसाद जी की रचना आंसू से प्रभावित होकर की है।

आंसू काव्य के लिए आलोचकों एवं विचारकों ने तरह तरह के भाव प्रस्तुत किए हैं किसी ने आंसू को नितान्त सांसारिक प्रेमी प्रेमिका के मिलन विरह की गाथा माना तो किसी ने उसे आत्मा तथा परमात्मा से जोड़कर देखा तथा किसी-किसी ने प्रकृति के जड़ चेतन स्वरूप के नर्तन के विभिन्न रूपों की छाया को मन के दर्पण में प्रतिबिम्बित होते हुए माना है। सत्य कुछ भी हो 'आंसू' और सांझ दोनों में सहज मानव हृदय के प्रेम की अभिव्यक्ति की चरम परिणति अवश्य दिखाई देती है।

सांझ के प्रथम छन्द के प्रारम्भ से प्रकृति और मनुष्य के जीवन का समन्वय कर जैसे जीवन दर्शन का सार प्रस्तुत किया गया है-

जिस दिन से संझा आई
छा गई उदासी मन में
ऊषा के दृग खुलते ही
हो गई सांझ जीवन में
मुँह उतर गया है दिन का
तरुओं में बेहोशी है
चाहें जितना रंग लाए
फिर भी प्रदोष दोषी है

प्रकृति के जड़ चेतन स्वरूप से चलकर सांझ, प्रणय की अतीत स्मृतियों में विचरने लगती है जिसमें विरह की असीम वेदना है, मिल न पाने की व्यथा है। यह कथा किसी भी लौकिक प्रेम जैसी ही लगती है-

आंसू की कुछ बूंदों में
सारा जीवन सीमित है
पलकों का उठना गिरना
मेरे सुख की अथ इति है

प्रतिकूल हुए जब तुम ही
तब कूल कहाँ से पाऊँ
सुधि की अधीर लहरों में
कब तक डूबूँ उतराऊँ

उस दिन तुमने हाँ कहकर
निश्चल विश्वास दिलाया
अब कितने शब्द बिताऊँ
ले एक शब्द की माया

प्रिय के प्रथम दर्शन की छवि प्रेमी के हृदय पर सदैव अंकित रहती है जिसे नर से नारायण तक ने अनुभव किया है। इस प्रथम मिलन के क्षण को कवियों और लेखकों ने अपनी-अपनी कल्पना के रंगों से चित्रित किया है। वह प्रथम मिलन चाहें राम-सीता, कृष्ण राधा का हो, चाहे किसी सामान्य प्रेमी जन का हो। फिर गुप्त जी तो कुशल चित्रकार, मूर्तिकार, कवि, साहित्यकार भी है, उन्होंने सांझ काव्य में प्रथम मिलन का जो सुन्दर सजीव चित्र खींचा है इसे पढ़कर किसी के हृदय में भी प्रेम तरंगित हो उठता है-

यौवन प्रभात में मैंने
उस कनक लता को देखा
ज्यों हरी दूब पर पड़ती
सुकुमार धूप की रेखा
अनबोली कली लजाकर
छिप गई कहीं झुरमुट में
मुकुलित सौरभ की गाथा
गूंजी कवि के श्रुति पट में
दी खींच हृदय पर रेखा
उन अनियारे नयनों में
अन्तर के कोमल कोने
छू दिये चपल पलकों ने

यह मिलन केवल दैहिक मिलन नहीं है, वरन् प्रकृति और पुरूष का भी संयोग है।

नभ देख रहा था भू को
यौवन की फुलवारी को
भू देख रही थी नभ को
नयनों की लाचारी को

मिलन की घड़ियाँ सदैव छोटी ही होती है। विरह का बसेरा मन का नगर उजाड़ देता है। सांझ की भी कुछ यही कहानी है-

बढ़ती ही गई दिनों दिन
दोनों की देखा देखी
सहसा नभ ने पट पर
करुणा की रेखा देखी
क्रीड़ा छिप गई क्षणों में
पीड़ा ही मैंने जानी
वह एक ठेस मीठी सी
बन बैठी सजल कहानी।

विरह के क्षणों में सृष्टि के रूप पर भी जैसे विरह की कालिमा छा जाती है। प्रकृति के सभी रूप जो कभी सुख प्रदान करते थे वही दुःख के सागर में झूबने लगते हैं-

काली काली रजनी में
काले बादल घिर आए
या बुझे हुए सपने है
नभ के नयनों में छाए
प्यासी पलकों पर उतरी
पूनों के शशि की किरणें
घुल-घुलकर पिघल -पिघल कर
फिर लगी बिखरने, गिरने
तारों की उज्जवल लिपि में
निशि ने निज दुःख भर डाला
पर मेरी दुःख लेखा का
अक्षर अक्षर है काला काला

विरह वेदना में जीवन जैसे भार स्वरूप लगता है जिससे मुक्ति पाने का कोई उपाय नहीं है-

सूना मन, सूना जीवन
सूने दिन, सूनी रातें
सूनी सूनी आंखों में
छाई दुःख की बरसातें

परन्तु प्रिय के लिए सदैव शुभकामनाएं ही मन में रहती हैं

शापित है विधि कृत कहकर
सह ही लेंगे दुःख सारा
तुम सुखी रहो निश्चल हो
युग-युग तक विभव तुम्हारा

पर अन्तिम इच्छा फिर भी प्रणय निवेदन और मिलन की रहेगी।

सारे आंसू कन सूखें
पलकें रूक कर झुक जाएं
जब दोनों नयन अभागे
पथ देख देख पथराएं
तब दबे पांव तुम आना
चुपचाप चुराने सांसे
जायेगी निकल स्वयं ही
तन से समीर की फांसें

सृष्टि के आदि से लेकर आज तक जड़-चेतन, प्रकृति -पुरुष सबमें उस अदृष्टा की ऐसी सुचालन शक्ति व्याप्त है जिसे कोई भी ठीक से नहीं जान सका है। सब इसी रहस्य के आगे नत मस्तक हो जाते हैं-

यह गोल-गोल पिडों से
पूरित खगोल कैसा है
शशि के पीछे तारे हैं
तारों के पीछे क्या है?
मानव शरीर में कैसे
सौन्दर्य सृष्टि होती है
हृत हृदय हिला देने में
क्यों सफल दृष्टि होती है

सांझ कृति की रचना शब्दों के माध्यम से कुछ इस तरह हुई है जैसे कलाकार ने कूंची से कागज पर रंग बिखेरे हों। शब्दों की चित्रात्मकता इस कृति की बहुत बड़ी विशेषता है। यूँ तो सम्पूर्ण काव्य में अनेक स्थान इस तरह के उदाहरण से भरे पड़े है परन्तु कुछ दृष्टव्य हैं-

जलदों के जल से मिलकर
फिर फैल गए रंग सारे
व्याकुल है प्रकृति चितेरी
पर कितनी बार संवारे
धीरे-धीरे ऊषा ने
नीरज की आंखे खोली
पंखों को मुखर बनाकर
कुछ भ्रमरावलियां बोलीं

काव्य में प्रकृति चित्रण अनुपम अलौकिक है-

पीली पराग कणिकाएं
किंजल्क जाल में उलझीं
इस उलझन के चिंतन से
चिंता की अलकें सुलझीं
मच गया विकल कोलाहल
रजनी के अंतःपुर में
किरणों की कोमल लपटें
जब उठीं तिमिर के उर में

श्रृंगार रस के दोनों पक्ष संयोग श्रृंगार और वियोग श्रृंगार अपनी पूर्णता तक काव्य में प्रकट हुए है। करुणा रस का भी कहीं-कहीं समावेश हुआ है।

अलंकारों की छटा दर्शनीय है। अनुप्रास, उपमा, रुपक, उत्प्रेक्षा काव्य में सायास गुंथे हुए प्रतीत होते हैं जैसे-

कब नूपुर के कलरव से
तन में तरूणाई जागी
कब कटि केहरि के भय से
भोली किशोरता भागी

अनुप्रास

तटहीन व्योग गंगा में
तारापति तरनी तिरती
तारक बुद बुद उठते है
पतवार किरन की गिरती

रूपक

आनन सरोज को तजकर
अलका अलियों की अवली

सारी निशि बंदी रहकर
यौवन प्रभात में निकली
कौमुदी छीन लेने को
चल पड़े सघन घन श्यामल
शशि के मुख पर बिखरी थी  उपमा
किसकी अलकों की उलझन

सांझ की भाषा सरस प्रवाहपूर्ण, संस्कृत निष्ठ खड़ी बोली है। कहीं-कहीं तत्सम शब्दों का प्रयोग हुआ है। उसमें लक्षणा व्यंजना शैली अधिक प्रयोग की गई है। सम्पूर्ण काव्य की रचना में 14-14 मात्राओं के छन्द का प्रयोग किया गया है। स्वयं गुप्त जी ने सांझ की भूमिका में छन्द के विषय में लिखा है कि पिंगल शास्त्री 'सखी', 'मानव', 'हाकल' आदि नाम देते है पर मुझे उसके लिए आंसू छन्द कहना ही उचित लगता है।

जयशंकर प्रसाद जी की 'आंसू' और जगदीश गुप्त जी, के 'सांझ' में अत्याधिक समानता है। दोनों की भाषा एक जैसी संस्कृत निष्ठ खड़ी बोली है। कला पक्ष और भाव पक्ष का सौन्दर्य दर्शनीय है। यूँ तो आंसू और सांझ एक जैसे ही प्रतीत होते है फिर भी कुछ-कुछ प्रसाद जी ने लिखा है-

जो घनी भूत पीड़ा थी
मस्तक में स्मृति बनकर
दुर्दिन में आंसू बनकर
वह आज बरसने आई

गुप्त जी ने लिखा है-

शशि को पुतली में भरकर
जबसे मैंने दृग मींचे
कितने सागर लहराएं
भीगीं पलकों के नीचे

प्रसाद जी ने लिखा है-

मादक थी मोहमई थी
मन बहलाने की क्रीड़ा
अब हृदय हिला देती है
वह मधुर प्रेम की पीड़ा

गुप्त जी ने लिखा

क्या उस सम्पूर्ण सृजन की
निर्मल परिपूर्ति व्यथा थी
जो कुछ देखा सपना था
जो कुछ भी सुना कथा थी

प्रसाद जी ने लिखा है-

देखता शून्य में एकटक
मेरा विचार भूखा सा
मांगती तृप्ति माधुरियों
मेरी अतृप्त जिज्ञासा

गुप्त जी ने लिखा

नचती है नियति नटी सी
कन्दुक क्रीड़ा सी करती
इस व्यथित विश्व आंगन में
अपना अतृप्त मन भरती

दोनों रचनाओं में रजनी, तारे, ओस कण, पराग, शशि, सागर, कमल, धरती, ऊषा, इन्दु, सिन्धु, नभ, अलकावृष्टि, को आधार बनाकर धरा और गगन की प्रणय कथा अंकित की गई है।

सांझ काव्य आत्मा की संकल्पात्मक अनुभूति दार्शनिक चिन्तन है। दोनों के मिल जाने से विरह वेदना का मर्मस्पर्शी वर्णन, मिलता है जिसमें विरह की छटपटाहट से परिपूर्ण द्वैतानुभूति से लेकर सान्त्वना, सहानुभूति, समाधान एवं संयम से युक्त अद्वैतानुभूति तक कवि के पहुँचने में कोई भी जोड़-तोड़, व्यावधान दिखाई नहीं देता और नैतिकता आध्यामिकता और आदि के साथ जीवन संदेश का पुट परिलक्षित होता है सांझ रमणीयता में अद्वितीय है। निःसन्देह सांझ प्रेम विरह की अलौकिक अनुभूति, दुख-दर्द को सहने की अपार शक्ति रूप सौन्दर्य की विमल विभूति और लोक मंगल की मार्मिक अभिव्यक्ति के कारण हिन्दी के आधुनिक युग की प्रतिनिधि कृति है।

लेखाधिकारी उ0 रे0
1/309, विकास नगर, लखनऊ

# बेबस, लाचार बेचारी हिन्दी

**(व्यंग्य)**

**रंजना गुप्ता,** लिपिक (कार्मिक) कोर

एक अरसे बाद सरकारी दफ्तर जाना हुआ। घुसते ही दरवाजे पर हिन्दी जी मिल गयीं एकदम प्रफुल्लित व फुल मूड में। मैंने आश्चर्य मिश्रित प्रसन्नता के साथ पूछा कहो प्रिये! आज अचानक इतने दिनों बाद कैसे नजर आई हो, और पूरा खुलकर छाई हो। उन्होंने अपनी चहकन मुद्रा को और विस्तार दिया और बोली भई मैं वैसे भी सामान्य दर्जे की नहीं हूँ। मेरा भी क्लास है, मैं साल भर तो कार्यालय में अत्यन्त गोपनीय कमरे में कबाड़ जी के पड़ोस में पड़ी रहती हूँ। मेरी काया को शीत घाम से बचाने के लिए सबसे बचाकर और छुपाकर रखा जाता है। मैं इतनी गुप्त और सुस्त रहती हूँ कि स्वयं को भी भूल जाती हूँ। पर हमारे नाम पर पलने वाले परजीवी जी इस मौसम में हमे झाड़ पोंछ कर निकाल लाते हैं। मैंने उनकी बात को समझते हुए सवाल जड़ा तो आज ही के दिन के लिए आपको सरप्राइज गिफ्ट की तरह निकाला गया है क्या? वे बड़े गर्वीले अंदाज में बोली देखिए सरकार जी ने हमारे नाम के अधिकारी तक तैनात कर रखे हैं। ये बचारे पूरे साल ''सितम्बर'' ठेठ कहें तो भादों के महीने का बेसब्री से इन्तजार करते हैं, क्योंकि बाकी दिनों में उनके चारागाह सूखे रहते हैं। हमारे कबाड़ वाले कमरे से निकलते ही उनके घर आँगन और पूरे परिवार में हरियाली छा जाती है।

हमारा नाम ले ले कर ये दिवस, सप्ताह व पखवाड़ा मना डालते है। अगर अधिकारी जी की पहुँच ऊपर तक रही तो पूरा महीना ही मेरे नाम कर देते हैं। इसलिए मैं भी पूरी सज धज और ठसक के साथ आती हूँ। मैंने कहा, क्या आपको यह महसूस नही होता कि यदि आप पूरे साल ऐसे ही सर्वत्र छाई रहें तो ज्यादा अच्छा रहेगा। उन्होंने पूरी दृढ़ता और आत्म संतोष के साथ जवाब दिया- बिल्कुल नहीं मैं ऐसे ही खुश हूँ। पिछले पैसठ सालों से जहाँ आदमी जी अपनी एक अदद खुशी को तलाश रहे हैं वही सरकार जी ने कम से कम हमार लिए हफ्ता न सही साल तो बांध ही दिया। मैं साल में एक बार खुश तो हो ही लेती हूँ इससे हमारे भक्तों को भी कई तरह के पुरस्कार व सम्मान मिल जाते हैं।

''हम पूर्ण रूप से सन्तुष्ट है जी''। इससे ज्यादा तो आजादी के समय हमारे महापुरुषों को भी संतुष्टि नहीं हुई होगी शुक्र मनाइये कि साल में हम गाजे-बाजे और भारी भरकम बजट के साथ प्रगट तो हो जाते हैं। हमारे आने की खुशी में अकादमी जी और संस्थान जी भी गतिमान हो जाते हैं।

मैं जिस काम से कार्यालय आया था, जल्दी से उठने लगा तो हिन्दी जी ने मेरा रास्ता रोक लिया और बोली - अजी आपका काम इस समय होगा भी नहीं। पूरा कार्यालय हमारा महोत्सव जो मना रहा है। इसलिए अंग्रेजी जी छुट्टी पर हैं। मैंने कहा पूरे साल अंग्रेजी जी ही हुकूमत चलाती हैं तो आपके लिए कौन सा समय आरक्षित होता है। हिन्दी जी बोली - आप भूल रहे हें वे 'अंग्रेजी' है पैदाइसी ''जी'' हैं। मैं चल पड़ा वो एकटक निहारती रहीं।

# मानवीय साहित्यकार, भीष्म साहनी

(लेख)

हितेश कुमार सिंह

संभवतः भीष्म साहनी नाम से मेरा पहला परिचय कक्षा सात या आठ में धारावाहिक 'तमस' को देखते हुए हुआ, जब घर में बड़ों द्वारा इस धारावाहिक का लेखक भीष्म साहनी को बताया गया। उसी समय मेरे मस्तिष्क में भीष्म साहनी की अमिट छाप पड़ गयी। एक ऐसा लेखक जो साम्प्रदायिकता का सदैव विरोधी रहा और जिसने मानव मूल्यों एवं धर्मनिरपेक्षता की रक्षा हेतु हरसंभव प्रयास किया। उनकी यह दृष्टि उनके साहित्य में परिलक्षित होती है।

भारत पाक विभाजन की त्रासदी पर 'तमस' जैसी कालजयी रचना लिखने वाले भीष्म साहनी हिन्दी के उन गिने चुने लेखकों में थे जिन्होंने विभाजन की त्रासदी स्वयं झेली थी और साथ ही साथ अपनी रचना का विषय भी बनाया। 1974 ई0 में प्रकाशित उनका उपन्यास 'तमस' यशपाल के 'झूठ सच' के बाद दूसरी ऐसी महत्वपूर्ण कृति है जिसमें विभाजन की पीड़ा को तल्खी से दर्ज किया गया है। 1975 ई0 में इस कृति पर उन्हें साहित्य अकादमी पुरस्कार मिला। भीष्म साहनी आधुनिक हिन्दी साहित्य में सशक्त अभिव्यक्ति एवं बेहद सादगी पसंद लेखक के रूप में विख्यात हैं। उन्होने अपनी कहानियों एवं उपन्यासों में सदैव मानवीय मूल्यों को प्राथमिकता दी।

पाकिस्तान के रावलपिंडी में 8 अगस्त 1915 को जन्में भीष्म साहनी अपने समय के प्रख्यात अभिनेता बलराज साहनी के छोटे भाई थे। उन्होंने लाहौर के पंजाब विश्वविद्यालय से अंग्रेजी में एम.ए. किया और वहाँ वह व्याख्याता भी बने । स्वतंत्रता के उपरान्त भीष्म साहनी भारत आ गए और समाचार पत्रों में लिखने के साथ-साथ साहित्य की सेवा भी करते रहे। बाद में वह भारतीय जन नाट्य संघ (इप्टा) के सदस्य बने।

उनके बड़े भाई बलराज साहनी भी हिन्दी के अच्छे कहानीकार थे और उनका भी एक कहानी-संग्रह प्रकाशित हुआ था। दोनों भाई कालेज के दिनों से ही कहानियाँ लिखने लगे थे।

सुप्रसिद्ध कहानीकार भीष्म साहनी 1965 -67 ई0 तक 'नयी कहानियां' पत्रिका के संपादक रहे। दिल्ली विश्वविद्यालय के जाकिर हुसैन कालेज में अंग्रेजी के प्रोफेसर रहे श्री साहनी ने ' अमृतसर आ गया', अहं ब्रह्मास्मि ' 'चीफ की दावत', 'वांगचू सागमीट' जैसी कहानियां लिखकर हिन्दी कहानी को एक नई दिशा दी। उनकी कहानियाँ प्रेमचन्द्र की परम्परा को समृद्ध करती हैं। उनकी कहनियों की भाषा की सादगी और सरलता प्रेमचन्द्र की कहानियों की भाँति ही सामान्य पाठकों के लिए काफी रुचिकर एवं पठनीय हैं।

भीष्म साहनी कहानी लेखन के बाद उपन्यास लेखन में उतरे 'तमस' से पहले भी उन्होंने एक उपन्यास लिखा था किन्तु 'तमस' ने उन्हें अभूतपूर्व ख्याति दी। 'तमस' भारत पाक विभाजन की त्रासदी के लगभग तीन दशक बाद प्रकाशित हुआ था। इस उपन्यास की जिस बात ने मुझे सर्वाधिक प्रभावित किया, वह है - उपन्यासकार द्वारा उस त्रासदी की सूक्ष्मातिसूक्ष्म घटनाओं एवं चरित्रों का इस ढंग से चित्रण किया कि उस त्रासदी का उसके वास्तविक रूप में रेखांकन हो सके।

संभवतः यह काम लोगों को ही मालूम होगा कि 'तमस' लिखने की प्रेरणा भीष्म जी को भिवंडी में हुए दंगो एवं नरसंहार (1973) से मिली थी। सन् उन्नीस सौ सैतालीस का दर्द इतने वर्षों बाद भिवंडी दंगे के माध्यम से उभरा । यद्यपि भारत पाक विभाजन की त्रासदी, यातना

एवं पीड़ा को भीष्म साहनी ने स्वयं एवं सपरिवार झेला था किन्तु 1974 में आकर 'तमस' के माध्यम से यह घटना युगीन पीड़ा के रूप में मुखरित हुई। गोविन्द निहलानी ने इस उपन्यास पर 'तमस' नाम से ही एक लोकप्रिय धारावाहिक बनाया। भीष्म साहनी ने स्वयं भी अभिनय किया। भीष्म साहनी ने अपने अग्रज बलराज साहनी के पदचिह्नों पर चलते हुए कुछ अन्य फिल्मों में भी अभिनय किया अपने जीवन के अन्तिम समय में सईद मिर्जा की फिल्म 'मोहन जोशी हाजिर हो' में उन्होंने काफी जीवान्त अभिनय करके सबको चौंका दिया।

एक अच्छा कहानीकार उपन्यासकार होने के साथ-साथ भीष्म साहनी एक अच्छे अनुवादक भी थे। वह 1957-63 तक एक अनुवादक के रूप में मास्को में व्यतीत किए। उन्होंने मास्को के फॉरेन लैग्वेजेस पब्लिकेशन हाऊस में अनुवादक के तौर पर दो दर्जन रुसी पुस्तकों का हिन्दी में अनुवाद किया। इसमें टालस्टाय के एक उपन्यास का अनुवाद 'पुनरुत्थान' नाम से किया था। यह समय साम्यवादी विचारधारा के चरमोत्कर्ष का समय था। भारत लौटने के बाद भी सोवियत संघ के प्रति उनकी आदर्श छवि बनी रही । भीष्म साहनी ने यूनेष्को के लिए यशपाल के उपन्यास 'दिव्या' का अंग्रेजी में अनुवाद किया था। यशपाल को अंग्रेजी में लाने वाले भीम साहनी ही थे।

इसके अतिरिक्त भीष्म साहनी ने नाटक के क्षेत्र में भी हाथ आजमाया। उन्होंने 1977 में 'हानूश', 1984 में 'माधवी' तथा 1993 में 'मुआवजे' 'कबिरा खड़ा बाजार में' नाटक लिखा जो काफी चर्चित रहा। भीष्म साहनी जिस समय 'इप्टा' में सक्रिय थे, उसी समय इनका परिचय गीतकार शैलेन्द्र से हुआ । आगे चलकर दोनों में काफी प्रागढ़ दोस्ती हो गयी।

भीष्म साहनी की प्रमुख कृतियों मे तमस, बसंती, मेय्यादास की गाड़ी (उपन्यास), भाग्यरेखा, बांगचू और निसाचर (कहानी संग्रह), हानूस, माधवी, कबिरा खड़ा बजार में (नाटक) गुलेल का खेल (बालकथा) शामिल है। उनका अन्तिम उपन्यास 'नीलू नीलमा नीलोफर' था। उन्होंने अपने बड़े भाई बलराज साहनी की जीवनी 'बलराज माई ब्रदर' लिखी। उनके उपन्यास 'बसंती' पर दूददर्शन ने एक लोकप्रिय धारावाहिक बनाया था।

भीष्म सहनी के साहित्य अकादमी पुरस्कार, सोवियत लैंड नेहरु पुरस्कार, एफ्रो एशियाई लेखक पुरस्कार से सुशोभित किया जा चुका है। सन् 1998 में संयुक्त मोर्चा सरकार ने उन्हें पद्मभूषण से नवाजा । बाद में उन्हें साहित्य अकादमी में मानद् फैलो भी बनाया गया।

श्री साहनी एक प्रगतिशील रचनाकार थे और वह आजीवन प्रगतिशील लेखक संघ से जुड़े भी रहे। वह वामपथी विचार धारा से आबद्ध होने के बावजूद अपनी सहजता, सौम्यता एवं मानवीयता को संजोये रखा। प्रगतिशीलता के प्रति उनकी अटूट आस्था के सम्बन्ध में अनेक प्रामाणिक जानकारियाँ उनकी आत्मकथा, आज के अतीत में मिलती है। आर्य समाजी परिवार से सम्बद्ध होने के बाद भी भीष्म जी का धर्म, धार्मिक ग्रन्थों, उनके सिद्धान्तों के बजाए मनुष्य, उसके जीवन से ही सोचने एवं लिखने की ऊर्जा मिली।

भीष्म साहनी विकास में विश्वास रखते थे और उनकी विकास की अवधारणा मार्क्सवादी विकास की अवधारणा के काफी नजदीक थी जिसका उल्लेख वह अपनी आत्म कथा में करते हैं- ''मेरा विश्वास है और यह विश्वास भी तब भी था और आज भी है कि प्रगतिशील लेखक संघ देश के सामाजिक सांस्कृतिक जीवन में बड़ी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता रहा है और आगे भी निभा सकता है।'' भीष्म जी मार्क्सवादी विचारधारा के तो थे किन्तु उनमें कट्टरता नहीं थी। मूलतः वे गहरी मानवीयता के लेखक थे।

हिन्दी भाषा हिन्दी साहित्य को
सर्वांगसुन्दर बनाना हमारा कर्तव्य है।
**- डॉ. राजेन्द्र प्रसाद**

# ''तपस्या''

(लेख) **जया रानी मालवीया,** कार्या0 अधीक्षक,(टंकण) विद्युत विभाग

वह बहुत तंग आ चुकी थी माँ के रोज के तानों उलाहनों से, '' ना जाने किस घड़ी किस नक्षत्र में ये पैदा हुई है कि कहीं इसके रिश्ते की बात ही नहीं बनती, हर जगह से जवाब ना ही मिलता है किसी तरह से इसकी शादी हो फिर दूसरी, तीसरी की बात सोचूँ, मगर नहीं....।'' माँ बड़बड़ाती हुई मेहमानों के जूठे बर्तन उठाती जा रही थी।'' अब बस भी करो निर्मला, देखना मेरी आरती के लिए बहुत अच्छा रिश्ता आयेगा। तू बिल्कुल चिंता ना कर.....'' दीनानाथ जी बोल रहे थे। आरती के पास इन बातों को सुन कर रसोई में बैठकर रोने के अलावा कोई चारा न था। आज जो लड़के वाले उसे देखने के लिए आये थे उनसे दीनानाथ जी और निर्मला दोनों को शादी की बात पक्की हो जाने की बहुत आस थी पर लड़के को आरती पसंद ही ना आई, क्योंकि उसको आज के नये जमाने की मॉडर्न लड़की चाहिए थी। आरती की तरह सीधी सादी घरेलू लड़की नहीं। आरती रोते-रोते सोच रही थी- आखिर उसे कोई लड़का पसंद नहीं करता तो इसमें उसका क्या दोष है, मगर हर बार लड़के वालों के जाने के बाद माँ उसे  कोसना बुरा भला कहना न भूलती।

वैसे माँ-बाउजी दोनों उसे बहुत प्यार करते थे परन्तु गृहस्थी की झंझट, मँहगाई, पाँच बच्चों की पढ़ाई ऊपर से आरती की शादी की चिंता। वो लोग भी क्या करें- बाउजी छोटी सी प्राइवेट नौकरी में लड़के वालों की दहेज की माँग कैसे पूरी कर पाते, बस इसी खीज को माँ आरती पर उतारा करती।

आरती अपने माता पिता की पहली संतान थी, उसका बचपन बहुत ही लाड़-प्यार में बीता । घर में सबकी दुलारी थी वो, लेकिन अच्छे दिन की अवधि अधिक न थी क्योंकि एक-एक करके लड़के की आस में उसके बाद तीन बच्चियों का पदार्पण होता गया और अंत में एक बेटा । पिता दीनानाथ जिम्मेदारियों के बोझ तले दबते चले गये। फिर भी वो किसी तरह गृहस्थी की गाड़ी खींच रहे थे।

समय बीतता रहा और आरती पूजा, अर्चना, वंदना एवं बेटा अखिल बड़े होने लगे और आरती कॉलेज में आ गई। वो शुरु से ही पढ़ने में बहुत अच्छी थी। और साथ ही अपने भाई बहनों को भी उनकी पढ़ाई में मदद करती । कॉलेज के टीचर उसका और उसकी बहनों की जरुरतों का ध्यान रखते थे क्योंकि वो उसके घर की परिस्थिति जानते थे। आरती भी हमेशा अपने टीचर्स की मान इज्जत करती तथा कक्षा में हर साल अव्वल आकर उनकी आशाओं पर खरी उतरती आ रही थी। कॉलेज के वार्षिक समारोह में प्रिंसिपल साहब ने उसके बी0कॉम0 फाइनल ईयर का रिजल्ट देख कर कहा ''आरती बेटा, बहुत बहुत मुबारक हो, आज तुमने साबित कर दिया कि अभावों के बीच भी व्यक्ति अपनी लगन, अपने परिश्रम से सफलता की सीढ़ियां चढ़ने में कामयाब होता है, मैं आज तुमसे तुम्हारी आगे की पढ़ाई का सारा खर्च उठाने का वादा करता हूँ, आशा है तुम निराश नहीं करोगी।''

आरती ने एक प्रतिष्ठित संस्थान में एम0बी0ए0 की पढ़ाई के लिए दाखिला ले लिया जिसका सारा खर्च प्रिंसिपल साहब ने किया। अभी उसे अपनी पढ़ाई शुरु किये दो महीने ही हुये थे कि उसके पिता दीनानाथ जी की मृत्यु हो गई, जो कि कुछ दिनों से अधिक बीमार चल रहे थे। पिता की मृत्यु आरती पर कहर बन कर टूटी, दूर- दूर तक उसका कोई सहारा न था, माँ तो बिल्कुल बुत सी बन कर रह गई थीं, शून्य में देखते रहना, न खाना, न पीना,

न किसी से बोलना! घर की स्थिति देखते ही बनती थी। न चाहते हुए भी आरती अपनी आगे की पढ़ाई बंद कर नौकरी की तलाश में जुट गई।

मिस्टर सहाय जो कि आरती के कॉलेज के प्रिंसिपल थे उन्होंने उसके इस आड़े वक्त में बहुत मदद ही नहीं की बल्कि उसके पूरे परिवार को भी सँभाला और आत्मिक बल भी प्रदान किया, जिस कारण धीरे-धीरे सब लोग गम से उबरने लगे। पर हाय रे किस्मत! यह मदद भी अधिक दिनों तक टिक न पाई। मिस्टर सहाय और आरती के बीच के गुरु शिष्या के पवित्र रिश्ते को नजर अंदाज कर मुहल्ले वालों ने आरती पर उँगली उठानी शुरु कर दी। जरा देखो इस बेहया को पिता के मरते ही कैसा गुल खिलाने लगी, पराये मर्द के साथ खुल्लम खुल्ला घूमना शुरु कर दिया, अरे अपनी बहनों की भी चिंता नहीं है इसे, आखिर उन सब पर क्या असर पड़ेगा । और तो और.. निर्मला की अकल पर भी पत्थर पड़ गया है जो उसे ये सब दिखाई नहीं दे रहा।

प्रिंसिपल साहब द्वारा आरती और उसके परिवार को की गई मदद की खबर पहुँचते पहुँचते उनके घर भी पहुँच गई, जिसको सुनकर शक के वशीभूत होकर उनकी पत्नी ने घर के वातावरण को कलुषित कर दिया और उनका जीना दूभर कर दिया। रोज-रोज की खिच-खिच से ऊब कर मिस्टर सहाय ने आरती को फोन करके कह दिया कि''आरती आइन्दा मुझसे मिलने की कोशिश मत करना और अब ना ही मैं तुम्हारी कोई मदद कर पाऊँगा'' ''सर, आप ये क्या कह रहे हैं, मैं तो आपको अपनी बैंक में नौकरी की खुशखबरी देने आने वाली थी.....'' आरती की बात पूरी भी नहीं हुई थी कि फोन डिस्कनेक्ट हो गया। ये सुनकर आरती को बहुत दुख हुआ और वह फूट-फूट कर रोने लगी, उसी समय उसका भाई अखिल, जो कि अपनी बड़ी दीदी को बहुत प्यार करता था, दौड़ता हुआ आया और अपनी खुशी उसके साथ शेयर करता, मगर दीदी को रोते देख कर बोला'' दीदी आप क्यों रो रही हो, पापा की याद आ रही है? मुझे भी पापा की बहुत याद आती है! चलो ना हम लोग पापा से मिलने चलें, माँ को बिना बतायें'' उसकी ये भोली बातें सुनकर आरती ने उसे गले लगा लिया और बोली'' ना भइया ना! पापा के पास जाने का नाम मत लेना, पापा के बाद एक तू ही तो मेरा सहारा है। अगर तू भी मुझसे बिछड़ गया तो मेरा क्या होगा?'' दीदी तुम ही तो कहती हो कि पापा भगवान के पास दवा लेने गये, फिर अब ऐसे कह रही हो! मेरी तो कुछ समझ में नहीं आता।'' अखिल ने ये बातें कुछ इस अंदाज में कही कि आरती को हँसी आ गई और दीदी को हँसता देखकर उन्हें पटाने के लिए तो बोला ''दीदी जब तुम हँसती हो तो बहुत प्यारी लगती हो'' ''अच्छा! तू बहुत बातें बनाने लगा है, चल बता क्या बताने आया था मुझे?'' दीदी आज मेरा मैगी खाने का बहुत मन हो रहा है, प्लीज बना दो! बस इत्ती सी बात, चल ढेर सारी मैगी बनाते है।''

आरती अपने भाई बहनों से बहुत प्यार करती थी और वो सब भी उसपर जान छिड़कते थे। उन सब को कभी भी किसी चीज की आवश्यकता होती, तो आरती से ही कहते थे, क्योंकि बाउजी की मृत्यु के बाद घर की परिस्थिति देखकर माँ एकदम चुप सी हो गई। इस कारण भाई-बहनों की परेशानी केवल आरती ही हल किया करती थी। 22 साल की उम्र में 40 साल की समझदारी रखती थी।

आरती को मि0 सहाय की सिफारिश से एक प्राइवेट फर्म में एकाउन्टेंट की नौकरी रु0 8000/- प्रतिमाह पर मिल गई और आज उसका पहला दिन है। नौकरी पर जान के पहले उसने जब माँ के पैर छुये तो माँ ने उसे उठाकर गले से लगा लिया और रुँधे गले से बोली ''बेटी'' तुझे हम सब के लिए कितना कष्ट उठाना पड़ रहा है.तू तो मेरी बेटी नहीं बेटा है'' ''नहीं माँ इसमें कष्ट कैसा, ये तो मेरा फर्ज है। अच्छा माँ मैं चलूं, कहीं नौकरी के पहले दिन ही लेट ना हो जाऊं'', जा बेटी, भगवान तेरी मदद करें'' कहती हुई निर्मला घर के कामों में लग गई।

इसी तरह दिन बीतते गये पूजा बी0ए0फानइल में, अर्चना बी0ए0 प्रीवियस में, वंदना अर्चना इण्टरमीडिएट और अखिल हाईस्कूल में पहुँच गये। आरती ने ही जिद करके अखिल को इंग्लिश मीडियम स्कूल में डाला क्योंकि आरती का कहना था कि मेरा राजा भइया बड़ा होकर डॉक्टर बनेगा और पिताजी का नाम रोशन करेगा।'' अखिल था भी बहुत ब्रिलियंट, हर क्लास फर्स्ट डिवीजन में पास होता हुआ दसवीं कक्षा में आ गया।

धीरे-धीरे आरती तीस वर्ष की हो गई। इस बीच उसके लिए कई अच्छे रिश्ते आये, माँ से उस पर शादी के लिए दबाव भी डाली मगर आरती ने यह कहकर कि ''माँ तुम मेरी शादी की चिंता छोड़कर पूजा व अर्चना की शादी कर दो, आखिर में निर्मला ने अच्छा लड़का देखकर पूजा की शादी कर दी, अगले साल वंदना और अर्चना की शादी भी सुयोग्य वरों से हो गई, जिसके लिए आरती ने ऑफिस से लोन लेकर तीनों बहनों की शादी बड़े धूमधाम से कर दी।

अब तक आरती अपने ऑफिस में पदोन्नति पाते-पाते एकाउन्ट ऑफिसर बन गई। और घर में अब सिर्फ माँ और आरती दोनों ही बची थी क्योंकि तीनों बहनों की शादी हो चुकी थी और भाई अखिल दूसरे शहर में अपनी डॉक्टरी की पढ़ाई करने चला गया । इधर कुछ दिनों से माँ बीमार रहने लगी थी, और एक दिन अचानक उनका हार्ट फेल हो गया। माँ की मृत्यु ने आरती को आत्मिक रूप से एक बार फिर से बुरी तरह से तोड़ दिया, उस वक्त में अखिल ने उसे बहुत सहारा दिया। तीनों बहनें भी बहुत दुःखी हुई और माँ की तेरहवीं के बाद अपने-अपने घर चली गई।

एक दिन अखिल ने आरती को उदास देकर कहा- ''दीदी मैं एक बात कहूँ, तुम ना मत करना'' नहीं होऊँगी, बोल ना क्या कहना है ''कुछ रुक कर धीरे से बोला दीदी, तुम शादी कर लो'' , ''शादी, और मैं? मुझ पैंतीस साल की बूढ़ी से कौन शादी करेगा?'' ''आदित्य भाई साहब'', आरती बड़े गौर से अखिल को देखती रह गई '' हाँ दीदी, वो आपको बहुत चाहते हैं, मगर आपसे कहने की हिम्मत नहीं जुटा पा रहे हैं।'' आदित्य जो कि उसी के ऑफिस में एकाउन्ट ऑफीसर के पद पर कार्य करते थे और मन ही मन आरती को बहुत चाहते थे।परन्तु एक के बाद एक उसकी घरेलू परिस्थितियों के चलते कुछ कहने का साहस नहीं जुटा पा रहे थे। आरती भी उनका सम्मान करती थी, उसको चुप चाप देख कर अखिल बोला ''दीदी, आपको पसंद है न, देखों ना मत करना'', ''अरे मुझे सोचने का समय तो दे, ऐसे कैसे हाँ कर दूँ, पूजा, वंदना, अर्चना की और उनके पतियों की राय भी लेनी पड़ेगी, उन सब की हाँ के बाद ही मैं हाँ कहूँगी, '' ''वो सब तैयार है'', ''अच्छा, तो चारों ने मिलकर खिचड़ी पकाई हैं, फिर मैं अब न कैसे कर सकती हूँ''। ''वाह, दीदी , मैं बहुत खुश हूँ''। ''मगर ये तो बता मेरे जाने के बाद तेरा क्या होगा?'' ''उसका भी इंतजाम हो गया है, मेरा मतलब है कि आदित्य भाई साहब की छोटी बहन अदिति मेरे साथ ही डॉक्टरी की पढ़ाई कर रही है और हम दोनों एक दूसरे से बहुत प्यार करते हैं और शादी करना चाहते है।'' ''क्या आदित्य जी इसके लिए तैयार है?'' हाँ दीदी यदि आप उनसे शादी के लिए हाँ करती हैं तो वो भी तैयार है।

दो दिन बाद शुभ मुहुर्त देखकर आरती एवं अदित्य और अखिल एवं अदिति की पहले सगाई और कुछ दिन बाद बड़े धूमधाम से दोनों की शादी हो गई और आरती की इतने सालों की तपस्या पूरी हो गयी।

हिन्दी वह धागा है, जो विभिन्न मातृ भाषाओं रूपी फूलों को पिरोकर भारत माता के लिए सुन्दर हार सृजन करेगा।

**- डॉ. जाकिर हुसैन**

राष्ट्रीय व्यहार में हिन्दी को काम में लाना देश की उन्नति के लिए आवश्यक है।

**- महात्मा गाँधी**

(कविता)

# जिन्दगी ये किस मोड़ पे ले आई है

**के0 श्यामला**, रे0वि0/चेन्नई

न माँ, न बाप, न बहन न यहाँ कोई भाई है,
हर लड़की की है बॉय फ्रेंड (Boy Friend),
हर लड़के ने गर्ल फ्रेंड (Girl Friend) पायी है।
चंद दिनों के ये रिश्ते, फिर वही रुसवायी है।
जिन्दगी ये किस मोड़ पे ले आई है
घर जाना होम सिक्नेस (Home Sickness) कहलाता है।,
पर गर्ल फ्रेंड (Girl Friend) से मिलने, टाईम रोज मिल जाता है,
दो दिन से नहीं पूछा माँ की तबीयत का हाल,
गर्ल फ्रेंड (Girl Friend) से पल-पल की खबर पायी है,
जिन्दगी ये किस मोड़ पे ले आई है
कभी खुली हवा में घूमते थे,
अब एसी (AC) की आदत लग गई है,
धूप हमसे सहन नहीं होती,
हर कोई देता यही दुहाई है,
जिन्दगी ये किस मोड़ पे ले आई है
मेहनत के काम हम करते नहीं,
इसलिए जिम (GYM) जाने की नौबत आई है,
मेकडोनाल्ड्स (MCDonalds), पिज्जाहट (Pizzahut) जाने लगे
दाल रोटी तो मुश्किल से खायी जाती है, जिन्दगी ये किस मोड़ पे ले आई है
वर्क रिलेशन्स (Work Relations) हमने बढ़ाए
पर दोस्तों की संख्या घटायी है,
प्रोफेशनल (Professional) ने की है तरक्की,
सोशियल नेटवर्किंग (Social Networking) को अपनाई है,
जिन्दगी ये किस मोड़ पे ले आई है

□

# ''हिन्दी उच्चारण मधुर''

**गोविन्द प्रसाद शुक्ल 'धुनी'**
प्राचार्य, बी.टी.सी., गोरखपुर

हिन्दी बढ़ती जा रही, जर्मन व जापान।
अमरीका में पढ़ें सब जानें चतुर सुजान।।1।।
नार्वे में है पढ़ रहे, हिन्दी सब मन लाय।
आस्ट्रेलिया में सोचते, सबको देय पढ़ाय।।2।।
हिन्दी उच्चारण मधुर, हिन्दी में रसराज।
हिन्दी संस्कृत मिल बढ़ें, सुसंस्कृत बने समाज।।3।।
कुछ नक चढ़े दिखा रहे, बनावटी है भाव
अंग्रेजी के लग रहे, कुछ अनबूझे दाँव।।4।।
फिर भी अपनी राह में, रोड़े पड़े अनेक।
हिन्दी अपनी चाल में, चलती रहती देख।।5।।
''धुनी'' निवेदन कर रहा, हिन्दी का उत्थान
ऐसा कुछ प्रयास हो, सिलपर बने निशान।।6।।
वैज्ञानिक शब्दावली, तकनीकी साहित्य।
जोड़-जोड़कर ज्ञान कण, सादर करें प्रयुक्त।।7।।
जीवन के उत्पाद सब, उपयोगी कर लेंय।
कुछ मांगे अपने लिए अपना सबको देंय।।8।।
भारत में सम्पर्क का, हिन्दी बनती राह।
गेय छंद से युक्त है, सबकी बनती चाह।।9।।

□

अहिन्दी भाषा-भाषी प्रांतों के लोग भी सरलता से टूटी-फूटी हिन्दी बोलकर अपना काम चला लेते हैं।
**- अनंतशयनम् आयंगर**

# सोच

गरिमा श्रीवास्तव पुत्री श्री अनिल कुमार श्रीवास्तव,
रे0वि0/अंबाला छावनी

(कविता)

कल से आज तक बहुत कुछ बदला,
बहुत सी चीजें कल थीं आज वो नहीं है,
"हर वक्त" वक्त के साथ बदलता है,
वो कल बदला था, वो आज बदला है,
वो कल भी बदलेगा।
जिसमें सबसे अहम भूमिका है सोच की
आज उसी सोच पे चलो सखी करते हैं व्यंग्य
क्या बदला है कल से आज तक?
गाँव से शहर या बैलगाड़ी से मोटर गाड़ी?
वो कच्ची सड़कों से पक्की सड़कें?
या फिर चीजों की मारा-मारी?
जो बदलना था, वो तो अभी तक न बदला,
न स्त्री के प्रति नज़र, न उसका सम्मान।
हाँ एक चीज़ जरूर है बदली दुनिया में आ गए हैं
और भी हैवान।
अरे! मैं तो कहती हूँ एक पंछी का जन्म है बेहतर।
कम से कम उसके पास पंख तो हैं।
पर क्या एक स्त्री के लिए ये कहना ठीक है
क्यों आज भी समाज उस सोच को नहीं छोड़ पा रहा।
कि..... लड़कियाँ सामान नहीं सम्मान है।
बोझ नहीं माँ-बाप की शान हैं।
पर शुरूआत भी किससे होती है? औरतों से ही।
जो अपने लाडलों को सिखाती है
बेटा रो नहीं ..तू लड़का है।
अरे! ये कहने के बजाय कि लड़के रोते नहीं।
काश! कह दिया होता ऐ माँ तूने कि लड़के रूलाते नहीं।
तो शायद वो जान आज जिंदा होती।
वो जान जो किसी की शान थी।
किसी का सम्मान थी।
कैसी है ये सोच?
जैसे कि पैर में आई मोच।
एक अपना चलना रोकती है, तो एक जिन्दगी का।
इसे बदल दो ऐ दोस्तों।
क्योंकि ये वक्त भी बदलेगा।
इतिहास के पन्ने पे माँ का नाम हमेशा चमकेगा।
ऐ माओं इस शब्द की शान को न मिटने देना।
अपने लाडले के प्यार में इसे इतना न गिरा देना।
कि दुनिया का एक पवित्र बंधन भी टूट जाए।
जिस शब्द से आती है मुँह पे मुस्कुराहट उसी से
लोगों को "नफरत" न हो जाए।

□

प्रांतीय ईर्ष्या-द्वेष दूर करने में जितनी सहायता हिन्दी प्रचार से मिलेगी, उतनी दूसरी चीज से नहीं।
- **सुभाष चन्द्र बोस**

यदि आप सौ व्यक्तियों की सहायता नहीं की सकते तो केवल एक की ही सहायता कर दें।
- **मदर टेरेसा**

# राष्ट्रकवि पं. सोहनलाल द्विवेदी के काव्य में राष्ट्रीय चेतना के स्वर

(लेख)

विनोद चन्द्र पाण्डेय

राष्ट्रकवि के रूप में मैथिलीशरण गुप्त, माखनलाल चतुर्वेदी, बालकृष्ण शर्मा 'नवीन', रामधारी सिंह 'दिनकर' और पं. सोहन लाल द्विवेदी को मान्यता प्राप्त है। पं. सोहन लाल द्विवेदी प्रमुख गांधीवादी कवि तो कहे ही जाते हैं, उन्हें राष्ट्रीय चेतना का विशिष्ट ओजस्वी कवि भी माना जाता है। द्विवेदी जी का जन्म 5 मार्च सन् 1906 ई. को उत्तर प्रदेश के फतेहपुर जनपद के बिंदकी कस्बे में हुआ और 1 मार्च सन् 1988 को उनका देहावसान हुआ। इस अवधि में जिन्होंने हिन्दी भाषा और साहित्य की महती सेवा की और अनेक काव्य-कृतियों का सृजन किया। उनके जिन ग्रन्थों में राष्ट्रीय चेतना की कविताएँ संग्रहीत हैं, उनमें 'भैरवी', 'प्रभाती', 'युगान्धार', 'पूजा गीत', 'चेतना', 'मुक्तिगंधा' आदि प्रमुख हैं।

द्विवेदी जी की प्रेरणादायिनी कविताओं ने भारतीय स्वतंत्रता -संग्राम सेनानियों के हृदय में ओज और उत्साह का संचार किया है। ''राष्ट्र वंदना'' के स्वरों में अपने स्वर को सम्मिलित करने का अनुरोध कर उन्होंने स्वतंत्रता के आन्दोलन में अपने योगदान की प्रस्तावना प्रस्तुत की है। 'भैरवी' काव्यसंग्रह की प्रथम कविता इस दृष्टि से विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं:-

'वन्दना के इन स्वरों में एक स्वर मेरा मिला लो।
वंदिनी माँ को न भूलो। राग में जब मत्त झूलो।।
अर्चना के रत्नकण में एक कण मेरा मिला लो।
जब हृदय का तार बोले/ श्रृंखला के बंद खोले।।
हों जहाँ बलि शीश अगणित, एक सिर मेरा मिला लो।'

महात्मा गांधी ने भारतीय स्वतंत्रता संगाम के अहिंसात्मक आन्दोलन का सफल और कुशल नेतृत्व किया था। अतः गांधी जी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व को रेखांकित करना स्वाधीनता संघर्ष का वन्दन एवं अभिनन्दन है। अपनी अनेक कविताओं के माध्यम से पं सोहन लाल द्विवेदी ने पूज्य बापू के प्रति अपने श्रद्धापूर्ण उद्गार अभिव्यक्त किये हैं। ''भैरवी'' में संग्रहीत 'युगावतार गांधी' कविता अत्यंत लोकप्रिय हुई हैं, जिसकी निम्नलिखित पंक्तियाँ उदाहरण- स्वरूप उल्लेखनीय हैं-

'चल पड़े जिधर दो डग मग में, चल पड़े कोटि पग उसी ओर।
पड़ गई जिधर भी एक दृष्टि, पड़ गये कोटि दृग उसी ओर।।
जिसके सिर पर निज धरा हाथ, उसके सिर-रक्षक कोटि हाथ।
जिस पर निज मस्तक झुका दिया, झुक गये उसी पर कोटि माथ।
हे कोटि चरण, हे कोटि बाहु। हे कोटि रूप हे कोटिनाम।
तुम एक मूर्ति, प्रतिमूर्ति कोटि। हे कोटि मूर्ति तुमको प्रणाम।
हे युग-द्रष्टा, हे युग सृष्टा, पढ़ते कैसा यह मोक्ष मंत्र?
इस राजतंत्र के खण्डहर में, उगता अभिनव भारत स्वतंत्र?

द्विवेदी जी ने अन्य प्रमुख स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों के विषय में काव्य-रचना कर राष्ट्रीय चेतना के संचार का सत्प्रयास किया है। पं. जवाहर लाल नेहरु, लौह पुरुष सरदार पटेल और नेता जी सुभाष चन्द्र बोस के संबंधों में रचित उनकी कविताओं के कुछ अंश उद्घृत हैं-

'कहती है' गंगा की लहरें यह है वह नर नाहर।

जिसकी जग में विमल ज्योति, जननी का लाल जवाहर

ग्राम-ग्राम में, नगर-नगर में, गृह-गृह में जा जाकर।
आज़ादी की अलख जगाता तन में भस्म रमाकर।(भैरवी)
लौह पुरुष सरदार! करुँ वन्दन तेरा किन शब्दों में।
राष्ट्रपुरुष तुमसे मिलते है किसी राष्ट्र को अब्दों में।।
तेरा गर्जन एक, कि निर्बल में नवीन बल आता है।
तेरा वर्जन एक कि बैरी बढ़ पीछे मुड़ जाता है।' (चेतना)

नवयुवकों में नव उमंग की नई लहर लहराते चल।
देश-प्रेम की पावन गंगा, पग-पग पर छहराते चल।
राष्ट्र-ध्वजा नीलाम्बर का, अंचल छूते घहराते चल।
स्वतंत्रता के मधुर युद्ध के धन घमण्ड घहराते चल।
चमको राष्ट्र-गगन मण्डल में चूमे चरण-सिन्धु तेरे।
मेरे वीर सुभाषचन्द्र। सौभाग्य चन्द्र बन जा मेरे।' (सेवाग्राम)

पं. सोहन लाल द्विवेदी की स्वस्पातन्त्य-वीर महाराणा प्रताप के संबंध में रचित ओजस्वी कविता भैरवी काव्य-कृति से संग्रहीत है। यह देश प्रेम और राष्ट्रीयता की भावना से ओत प्रोत वीर रस की रचना है। विशेष रूप से निम्नलिखित पंक्तियाँ दृष्टव्य हैं-

'वैभव से विह्वल महलों को काँटों की कटु झोपड़ियों पर।
मधु से मतवाली बेलायें भूखी बिलखाती घड़ियों पर।।
रानी, कुमार-सी निधियों को माँ के आँसू की लड़ियों पर।
तुमने अपने को लुटा दिया आज़ादी की फुलझड़ियों पर।।

महात्मा गांधी की प्रिय वस्तुओं और स्वतंत्रता संग्राम की प्रमुख घटनाओं पर अपनी लेखनी चलाकर द्विवेदी जी ने स्वतंत्रता के आन्दोलन में राष्ट्रीय चेतना का संचार करने में पूर्ण सफलता प्राप्त की है। कुछ उद्धरण अवलोकनीय हैं-

'खादी के धागे-धागे में, अपनेपन का अभिमान भरा।
माता का इसमें मान भरा , अन्यायी का अपमान भरा।।
खादी के रेशे-रेशे में अपने भाई का प्यार भरा।
माँ-बहिनों का सत्कार भरा, बच्चों का मधुर दुलार भरा।।'
'खादी ही भर-भर देश-प्रेम का प्याला मधुर पिलायेगी।
खादी ही दे-दे संजीवन, मुर्दों को पुनः जिलायेगी।।
खादी ही बढ़ चरणों पर पड़, नुपूर सी लिपट मनायेगी।
खादी ही भारत से रूठी, आजादी को घर लायेगी।' (भैरवी)
नवयुग का नव आरंभ हुआ, कुछ नये नमक के टुकड़ों पर।
आजादी का इतिहास लिखा, दांडी के कंकड़ पथरों पर ।।

द्विवेदी जी ने अनेक अभिमान गीतों और प्रमाण गीतों का सृजन किया, जिनका उपयोग जन जागरण के लिए अनेक स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों ने उत्साहपूर्वक किया। जनता के उद्‌बोधन के लिए इन प्रयाण गीतों ने अपनी महती भूमिका निभाई। राष्ट्रीय चेतना के ओजस्वी स्वर फूँकने में इनका योगदान अप्रतिम है। 'भैरवी' काव्य संग्रह में सम्मिलित कुछ अभियान गीतों की झांकी दृष्टव्य है-

'उठो बढ़ो आगे, स्वतंत्रता का स्वागत -सम्मान करो।
वीर सिपाही बन करके बलिवेदी पर प्रस्थान करो।।
हम मातृभूमि के सैनिक है, आज़ादी के मतवाले हैं।
बलिवेदी पर हँस-हँस करके, निज शीश चढ़ाने वाले हैं।।
सन्तान शूरवीरों  की हैं, हम दास नहीं कहलायेंगे।
या तो स्वतंत्र हो जायेंगे, या रण में मर मिट जायेंगे।।
हम अमर शहीदों की टोली में, नाम लिखाने वाले हैं।
हम मातृभूमि के सैनिक हैं, आज़ादी के मतवाले हैं।।
तैयार रहो मेरे वीरों, फिर टोली सजने वाली है।
तैयार रहो मेरे शूरों, रणभेरी बजने वाली है।
इस बार बढ़ो समरांगण में, लेकर वह मिटाने की ज्वाला।
सागर तट से आ स्वतंत्रता पहना दे तुझको जयमाला।'
अशेष रक्त तोल दो, स्वतंत्रता का मोल दो,
कड़ी युगों की खोज दो, डरो नहीं, मरो वहीं, बढ़े चलो, बढ़े चलो।'

स्वतंत्रता आन्दोलन में जिस ध्वजा को लेकर भारतीय स्वतंत्रता संग्राम सेनानी निर्भीक होकर अग्रसर होते थे उसका भी वन्दन और अभिनंदन करना राष्ट्रकवि पं. सोहन लाल द्विवेदी नहीं भूले हैं। उनका कथन है-

जय राष्ट्रीय निशान! जय राष्ट्र निशान!
जय राष्ट्रीय निशान!!
तेरा मेरुदण्ड होकर में,स्वतंत्रता के महासमर में, वज्रशक्ति बन ब्यापे उर में,
दे दें जीवन-प्राण! दे दें जीवन प्राण!
जय राष्ट्रीय निशान!! (भैरवी)

पं. सोहनलाल द्विवेदी के काव्य संग्रह 'प्रभाती' का भी राष्ट्रीय चेतना के स्वर मुखरित करने में विशिष्ट योगदान रहा है। इस कृति के संबंध में अपने विचार व्यक्त करते हुए द्विवेदी जी ने जनता के लिए साहित्य सृजन पर बल दिया है 'शताब्दियों से उपेक्षित, तिरस्कृत एवं बहिष्कृत जनता के लिए हम लिखें और उसकी भाषा में लिखें, जिसे वह समझ सके। आज हमारे राष्ट्र की माँग यही है कि हम जनता के लिए साहित्य सृजन करें।'' अपनी इस विचारधारा की पुष्टि में उन्होंने 'प्रभाती' के अन्तर्गत संग्रहीत 'कवि से' शीर्षक कविता में कवियों से निवेदन किया है-

'ओ नवयुग के कवि! जाग, जाग!

प्राचीन पुरातन कलाकार वैभव वंदन में हुए लीन;

महलों को तज झोपड़ियों में कब उनके मन की बजी बीन?

यह गुरु कलंक का पंक मेट, तू बन शोषित का अभयगान।

नंगा, भूखा, प्यासा समाज देखता राह तेरी महान।

नवजीवन के रवि! जाग! जाग! ओ नवयुग के कवि! जाग! जाग!

आजादी के आन्दोलन के समय स्वतंत्रता संग्राम सेनानी प्रभात फेरी के माध्यम से जनता का जागरण करते थे तथा जन जन के हृदय में देश प्रेम की भावना भरते थे। 'प्रभाती' काव्य कृति में सम्मिलित 'प्रभात फेरी' कविता की प्रस्तुत पंक्तियाँ उल्लेखनीय हैं-

'संतान शूरवीरों की हैं, हम दास नहीं कहलायेंगे

या तो स्वतंत्र हो जायेगे, या तो हम मिट जायेंगे

हम अगर शहीद कहायेंगे,

हम बलिवेदी पर जायेंगे, जननी की जय-जय गायेंगे।'

राष्ट्रकवि पं. सोहन लाल द्विवेदी रचित काव्य संग्रह युगांधार की सभी प्रेरणा-प्रदायिनी कविताएँ राष्ट्रीय चेतना की जागृति में सर्वथा समर्थ एवं सक्षम हैं। इस कृति के संबंध में द्विवेदी जी ने 'वक्तव्य' के अन्तर्गत अपने विचार इस प्रकार प्रकट किए हैं- 'युगांधार में युग की राजनैतिक, आर्थिक, धार्मिक एवं सामाजिक जन क्रान्तियों की चिनगारियाँ कैसे कहूँ धूम रेखाएं हैं।.... आज हमारे सामने सबसे जटिल समस्या यदि कोई है, तो एक ही है- दासता से भारत की मुक्ति। हमारी सभी व्यथाओं का एक ही उपचार है- स्वतंत्रता।' 'युगांधार' में बापू के प्रति, रेखाचित्र, बापू गांधी, गांधी-ग्राम, सेवाग्राम, भ्रमण, गीत, उगता राष्ट्र, हलधर से, मजदूर, जागो हुआ विहान, हमको ऐसें युवक चाहिए, ओ तरुण, ओ नौजवान, प्रयाण-गीत, अभियान-गीत, जागरण, कणिका, बेतवा का सत्याग्रह, विश्राम, कैसी देरी, अनुरोध, गृह त्याग, राजबंदी राष्ट्रकवि, दीनबन्धु एंड्रूज के प्रति, उद्‌बोधन, राष्ट्रध्वजा, क्रान्तिकुमारी, भारतवर्ष शीर्षक कविताओं का संग्रह किया गया है, जो राष्ट्रीय चेतना के संचार में सहायक रही हैं। 'अभियान गीत' शीर्षक कविता की ये पंक्तियाँ कितनी उद्‌बोधिनी है-

'सत्याग्रही बने वह, जिसका देश प्रेम से नाता हो।

प्राणों से भी प्यारी जिसको अपनी भारत माता हो।।

प्राण जायं, छोड़ें न कभी प्रण, ऐसी टेक निभाता हो।

स्वतंत्रता की रटन अधर में, जिसका भाग्य विधाता हो।।

बलिवेदी पर भीड़ लगी है, आज अमर बलिदानों की।

आज चली है सेना फिर से, धीर-वीरों-मस्तानों की।।'

द्विवेदी जी ने अपने देश भारत को नमन करते हुए उसके अतीत गौरव का गान किया है-

वह महिमामय अपना भारत, वह गरिमामय सुन्दर स्वदेश।

युग-युग से जिसका उन्नत सिर, है किए खड़ा हिमगिरि नगेश।।

इतिहास पटल पर संसृति के जो स्वर्ण- वर्ण में लिखा नाम।

वह है रघुपति की जन्मभूमि, वह है यदुपति का जन्म धाम।।

जिसके तृण-तृण में कण-कण में,वंशी बजती रहती अशेष।'

इस प्रकार राष्ट्रकवि पं. सोहनलाल द्विवेदी की कविताओं ने स्वतंत्रता आन्दोलन के समय आग में घृत का काम किया है। स्वतंत्रता की प्राप्ति पर स्वातंत्र्योत्तर काल में भी उन्होंने अपने दायित्व एवं कवि धर्म का निर्वाह किया है। उन्होंने उत्सव और उल्लास की कविताएँ लिखने के साथ ही साथ सम-सामयिक परिस्थितियों और समस्याओं की ओर ध्यान आकृष्ट करते हुए प्रगति के पथ पर अग्रसर होने का शुभ-संदेश भी दिया है। उनकी 'चेतना' और 'मुक्तिगंधा' काव्य-कृतियों की ओजस्वी कविताएँ इसका प्रमाण है। उन्होंने स्वतंत्रता के पुण्य पर्व और मुक्ति के मंगल प्रभात का सजीव चित्रण कर अपने हर्ष और आनन्द का सुन्दर प्रस्तुतीकरण किया है। जनता के मानस में भी उन्होंने राष्ट्रीय चेतना का संचार किया है। 'चेतना' कविता संग्रह की कतिपय पंक्तियाँ उदाहरण स्वरूप उद्धृत हैं-

'गाओ मंगल गीत रागिनी ।
मेरी स्वतंत्रता का नव शिशु, ले रहा जन्म बनकर नव विधु,
जनता जलधि हिलोर ले रहा, ले सुख की लहरें सुहागिनी/गाओ मंगल-गीत रागिनी।
जय हो इस पावनतम क्षण की जय हो जनता की जीवन की,
जय हो इस अमृत बेला की, नित नव मधु सौरभ विकासिनी /गाओ मंगल-गीत रागिनी।

+ + + +

गजल सफल हुई आज की पुनीत साधना /गूँज रही कीर्ति-कथा बन अतीत यातना,
उठ खड़ी हुई अभीष्ट सिद्धि लिए प्रार्थना/मूर्त बन रही स्वदेश की स्वतंत्र-भावना।
साज लो शृंगार हार, आ रही स्वतंत्रता/साज लो सितार तार, आ रही स्वतंत्रता ।।''

+ + + +

मुक्ति के मंगल दिवस की आज पूजन-अर्चना है।
मुक्ति के नूतन दिवस की आज नूतन वन्दना है।।
धन्य यह दिन, धन्य रजनी। बनी बंधनहीन जननी।
आज के दिन पर निछावर, युगों की तप साधना है।
मुक्ति के नूतन दिवस की, आज नूतन वन्दना है।।

द्विवेदी जी ने राष्ट्रसेवा की नव विकास और समाज सेवा के पथ पर निरन्तर आगे बढ़ते रहने की प्रेरणा प्रदान की है। 'चेतना' काव्य संग्रह की ''राष्ट्रध्वजा'' शीर्षक कविता की ये पंक्तियाँ दिशा-निर्देश एवं पथ -प्रदर्शन की दृष्टि से उल्लेखनीय है-

'हम बढ़ें उधर जिधर राष्ट्र की पुकार हो
हम बढ़े उधर जिधर राष्ट्र का सुधार हो,
हम बढ़े उधर जिधर राष्ट्र पर विचार हो
हम बढ़े उधर जिधर राष्ट्र पर प्रहार हो
कोटि -कोटि शीश उठ बढ़ें अभेद्य प्राण हो,
राष्ट्र-ध्वज राष्ट्र का अमर विजय निशान हो।'

'मुक्तिगंधा' में भी द्विवेदी जी द्वारा स्वातंत्र्योत्तर काल में लिखी गई, बहुचर्चित कविताओं का संग्रह किया है। 'पुरोवाक्' में कवि ने लिखा है- 'स्वातंत्र्योत्तर काल में देश जिन आर्थिक, सामाजिक तथा राजनैतिक गतिविधियों के मोड़ से गुजरा है, जनता पर जो उसकी प्रतिक्रिया हुई है, उसकी मानसिक आशा, निराशा, आकांक्षा, आक्रोश के भाव साकार होकर आपसे साक्षात्कार करना चाहते हैं।' इन रचनाओं में कवि की व्यक्तिगत नहीं, जनता की भावनाओं की अभिव्यक्ति है, जिसका वह प्रतिनिधि है, जिसका वह प्रवक्ता है, जिसका वह पहरी है। 'मुक्तिगंधा' की कविताओं में ''झण्डे फहराने वाले'' शीर्षक कविता अत्यधिक लोकप्रिय हुई है, जिसमें समकालीन यथार्थ का चित्रण है-

'ऐ लाल किले पर झण्डे फहराने वालो! सच कहना, कितने साथी साथ तुम्हारे हैं?

क्या आज खुशी की लहर देश में है सचमुच, उठ रहे खुशी के सचमुच ऊँचे नारे हैं?

कब तक ऐसे झूठे त्योहार मनाओगे? कब तक ऐसे झूठे श्रृंगार सजाओगे?

जिनमें मन खुलकर खिले नहीं, मुरझाया हो, ऐसे दुर्दिन में नाचोगे, तुम गाओगे ?

ये झूठी खुशियों और मनाओ आज नहीं, दिन आज खुशी का नहीं, दुखी दिलवालों का।

पीछे झण्डा फहराना ऐ झण्डेवालों, पहले जवाब दो मेरे चन्द सवालों का।

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों के प्रति भी द्विवेदी जी ने श्रद्धापूर्वक निवेदन किया है-

'किन छन्दों की अगरु-धूप से बन्धु उतारुँ आरती।
जिसकी वाणी में स्वर सप्तक वीणा-पाणि सँवारती।
कर्मवीर बन कर्म-गीत जीवन भर तूने गाया है।
मेरा सोया देश, सूर्य बन तूने सदा जगाया है।
हिमकिरीटिनी का मस्तक माणिक मणि से चमकाया है।
तेरे गीतों में संचारित नव भारत की भारती।
किन छन्दों की अगरु -धूप से बन्धु उतारुँ आरती।''

(मुक्तिगंधा)

पं. सोहन लाल द्विवेदी ने युवक और युवतियों का प्रगति पथ पर बढ़ने के लिए ओजस्वी स्वर में आह्वान किया है-

'शुभारम्भ जो किया देश में, नवचेतनता आई है।
मुरदा प्राणों में फिर से छायी नवीन तरुणाई है।
स्वतंत्रता की ध्वजा न नीचे झुके, यही ध्रुव ध्यान करो।
बढ़ों, देश के युवक युवतियों, आज पुण्य प्रस्थान करो।-

(मुक्तिगांव)

द्विवेदी जी को हिन्दी भाषा से अनन्य अनुराग था। अतः उन्होंने 'मुक्तिगंधा'' में संग्रहीत 'पुण्य प्रयाण' शीर्षक के माध्यम से विदेशी भाषा के राज्य को समाप्त करने का आह्वान किया है-

यही समय है जागो अपनी भाषा के ओ सम्मानी।
यही समय है, जागो अपनी संस्कृति के ओ अभिमानी।
यही समय है, जागो अपनी जननी के ओ बलिदानी।
तुमको समय पुकार रहा है आज अमर अभियान में।
चलो साथियों ! चलो साथियों ! पावन पुण्य प्रयाग में।''

स्वातंत्र्योत्तर-काल में राष्ट्रवासियों को पं. सोहन लाल द्विवेदी ने 'मुक्तिगंधा' से प्रकाशित 'जागरण गीत' द्वारा सजग और कर्त्तव्य परायण रहने का शुचि सन्देश दिया है, जिससे राष्ट्रीय चेतना बलवती हुई है-

'अब न गहरी नींद में तुम सो सकोगे, गीत गाकर, मैं जगाने आ रहा हूँ।

तुम उठो, धरती उठे, नभ शिर उठाये, तुम चलो गति में, नयी गति झनझनायें।

विपथ होकर में तुम्हें मुड़ने न दूँगा, प्रगति के पथ पर बढ़ाने आ रहा हूँ।

अब न गहरी नींद में तुम सो सकोगे, गीत गाकर में जगाने आ रहा हूँ।'

इस प्रकार राष्ट्रकवि पं0 सोहन द्विवेदी की अधिकांश कविताओं में राष्ट्रीय चेतना का ओजस्वी स्वर विद्यमान है। हिन्दी के इस महान् कवि को कोटि कोटि नमन् है-

'उस कवि का कोटि-कोटि वन्दन, उस कवि को मेरा कोटि नमन।

जिसने गाये राष्ट्रीय गीत, बतलाया भारत का अतीत।

स्वातंत्र्य समर के वीरों को दिखलाया बलि का पथ पुनीत।।

जिसने कवि कर्म निभाया था, कर मातृभूमि का अभिनन्दन।

उस कवि का कोटि-कोटि वन्दन, उस कवि को मेरा कोटि नमन।।'

हिन्दी द्वारा सारे देश को एक सूत्र में पिरोया जा सकता है।
**- डॉ. राजेन्द्र प्रसाद**

# बदनसीब....साँसों की सौगात पा गये !

(कविता)

इंजी. अरुण कुमार जैन

माथे पर तिलक लगाकर,आलिंगन में ले,
माँ बापू ने दी थी विदाई
जाओ प्रिये! प्रभु दर्शन कर आना,
भोलेनाथ का ले आशीष, हमारे लिए भी पुण्य लाना।
मन में शांति, आनंद व प्रभु आस्था के साथ वे घर में, पुत्र, बहू बच्चे प्रभु प्रांगण में।
आषीश पाने/पुण्य कमाने /ऊर्जा, शक्ति ले प्रभु चरणों से,
फिर जीवन में नव उल्लास लाने।
पर प्रकृति बनी चण्डिका, भोलेनाथ संहारक, प्राणदायिनी गंगा, प्राण हरणी,
पलभर में ही तहस नहस हो गया मधुमय संसार।
जीवनदायी जल बना लावा, दसों दिशाओं में हाहाकार।
होटल यात्रीगृह, धर्मशालायें बनी आपदा केन्द्र,
साँय-साँय करती पवन, घनघोर बरसते मेघ, प्रतिपल कड़कती जानलेवा बिजली,
रोम-रोम भय से व्याकुल, प्रभुनाम निरंतर अधरों पर,
प्रार्थना, याचना, रुदन, कोलाहल से भरा भूमण्डल,
हंसते गाते खिलखिलाते, संगी-साथी बह गये रौद्र प्रवाह में
धूल घूसरित भवन, अट्टालिकायें पथ, आश्रय स्थल,
प्रभु से जुड़ने की चाह विलुप्त । कट गये संसार से।
मोबाईल की साँसे टूटी, जल, भोजन, आश्रय का अभाव,
देखा दम तोड़ते सैकड़ों शिशुओं, बालकों, नर-नारियों को,
आँखों में भय की गहरी-गहरी खाईयाँ, पल-पल पास आती मृत्यु,
त्रासदी से सतत साक्षात्कार,
जान बचाने के उपक्रम में, अपनो की लाशों पर चढ़ते
हाथों में लिए हाथ, प्रिया, पुत्र का, आगे बढ़ते-घिसटते।
एकाएक जल प्रवाह से छूटे हाथ। बह गयी प्रिया, पुत्री
संहारिनी जल धारा में,
चिल्लाती, पुकारती, हाथ ऊपर कर जीवन बचाने का अंतिम प्रयास,
पर समा गयी दोनो जीवन दायिनी जल के विनाशक रौद्र रूप में।
कंधों पर सिहरता, रोता शिशु, सूख गये आँसू, अटके कंठ में प्राण।
युवा होने पर भी जर्जर, शक्तिहीन, क्लांत, थी मेरी देह,
शोक, विषाद, दुख से व्याकुल,
पुकारा, माँ, बापू , प्रिया, पुत्री, प्रभु को की याचना मर्मांतक स्वर में बहते आंसुओं से।
हे प्रभु भोलेनाथ बचाओ।।
पर एक और लहर के प्रहार से, उछला प्रिय पुत्र, बह गया जल प्रपात में,
पा....पा...! बचाओ,
उसका भी कोमल हाथ विलुप्त हो गया।
माँ बहिन के साथ अतल गहराईयों में, मेरा बदनसीब पुत्र भी खो गया।
मैं अकेला बेसुध इसी प्रहार से एक टीले पर।
आज कई दिनों बाद! होश आया है, एक कैम्प हास्पिटल में।
मस्तिष्क में कौंध उठा सारा अतीत,
अश्रुओं से अप्लावित नयन सूखे होंठ, सूनी आँखे, जर्जर काँपती देह।
हे प्रभु क्यों बचाया मुझे।
क्या उत्तर दूँगा बूढ़े माँ बाप व स्वजनों को,
कैस जिऊंगा, अपनो के बिना सारा जीवन।
क्या अपराध था हमारा।
भक्ति भाव से याचक बन आये थे, तुम्हारे द्वार,
पर हँसता खेलता परिवार, प्यारा संसार सभी ले लिया तुमने ।
एक ही पल में वो भी अपने ही द्वार!
कैसे अखिल विश्व कहेगा तुम हो दयालु व हो भोलेनाथ
गंगा जीवन दायिनी है जन-जन की,
हिमालय निवास है इनका।
क्या मुंह दिखाऊंगा माँ, बापू परिजनों को
जीवन भर अपनो की अर्थी का बोझ कांधों पर उठायें
अपना ही सलीब अपने कांधों पर उठायें।
नहीं जी सकूँगा,
मुझे भी अपनों के पास पहुंचा दो।
नहीं चाहिए मुझे ये नारकीय जीवन, मुझे भी मृत्यु दिला दो
एक अंतिम प्रश्न/याचना/निवेदन,
पापी कौन! जो प्रभु द्वार पर, मृत्यु के मुँह में समा गये
या मुझ जैसे बदनसीब जो सब कुछ लुटाकर साँसों की सौगात पा गये?

# दक्षिणेश्वर

**(कविता)**

**गणेश पाण्डेय,** रे0वि0,दानापुर

कर्म भूमि तू श्री राम कृष्ण की,
स्वामी विवेकानन्द की ज्ञान भूमि।
अमिट छाप छोड़ती भक्ति की
कदम जो रखते इस देव भूमि पर
ज्ञान गंगा की धारा बहाती हूँ,
जन मन की सोच मिटाती हूँ।
माँ काली का आशीर्वाद पाते,
होते खुशहाल, जो यहाँ आते।
माँ की कृपा का आकांक्षी बना,
हृदय से उद्योग जिसने किया
वह ज्ञान वैराग्य का जलधि बना,
जगत में सर्वत्र पूजा गया।
माँ काली में हुई अटूट भक्ति,
श्री राम कृष्ण को मिली दृढ़ शक्ति।
शक्ति श्रद्धा की निर्मल धार,
सदा बहती है दक्षिणेश्वर के द्वार।
श्री राम कृष्ण का पावन विचार,
जो आते हैं होता है उनका जीवनोद्धार।
मन की मलिनता मिट जाती है,
सुविचार की भावना पनप जाती हैं।
माँ काली की जीवन्त नगरी हैं,
अहसास होता है उनकी उपस्थिति है
मन में दिव्य छवि का आलोक फूटता
समस्त दुर्गुणों का धुंध छंटता है।
प्रेम मय विह्वल मन हो जाता है
अनायास एक शून्य में खो जाता है।
वहां की दुनिया निराली दिखती है,
चहुं ओर ओत प्रोत मां काली दिखती है।
सामने बैठो तो मिलती है अद्भुत शांति
भावना में आ जाती है मां की दिव्य कांति।
श्री राम कृष्ण हाथ जोड़े ध्यान में मग्न,
अविचल भक्ति देखकर मां है प्रसन्न।
स्वयं मन समाधिस्थ हो जाता है,
ममता के शीतल छांव में खो जाता है।
अद्भुत आलोक से दैदीप्यमान होकर,
करुणामयी मां का ही हो जाता है।
भक्ति से सराबोर जब मन हुआ,
मां की शीतल छांव में जब तन हुआ।
सांसारिक दुःख शौक स्वयं मिट जाता है,
दया, प्रेम, ममता से दामन जुड़ जाता है।
बंगभूमि धन्य है जहां है दक्षिणेश्वर
श्री राम कृष्ण जहां से हुए है भक्त प्रवर,
वर्षा होती जहां दया ज्ञान मां काली की
साक्षात् आभास होता है जगत रखवाली की।
एक बार आने से इच्छा होती है मन में,
बार-बार आने का मौका मिले जीवन में
मां की दिव्य दया का अमृत घूंट मिलता रहे,
जीवन के पवित्र आदर्श का पुष्प खिलता रहे।

# अब पछताए होत क्या.....

(कहानी)

**जी. अप्पाराव,** राजभाषा अधिकारी (से.नि.)

क्लास में आते ही ललिता ने सबकी हाजिरी ली और फिर कहा, ''बच्चों ! अपना अपना होमवर्क लेते आओ''

''यस् टीचर'' कहते हुए सारे बच्चों ने अपने -अपने नोट बुक्स टेबल पर रख दिए।

ललिता ने ब्लैक बोर्ड पर तीन प्रश्न लिखे कहा,'' मै आप लोगों को पन्द्रह मिनट का समय दे रही हूँ। इन तीनों प्रश्नों के जवाब लिखकर दिखाओ।''

जब सब बच्चों ने अपने-अपने नोट बुक्स पर प्रश्न उतार लिए तब ललिता ने सारे बच्चों को बरामदे में ले जाकर लाइन से बैठा दिया। ललिता प्रतिदिन यही करती थी। पहले दिन जो पाठ पढ़ाती थी, दूसरे दिन उस पाठ में से दो तीन प्रश्न पूछने की उसकी आदत थी।

ललिता का ख्याल था कि ऐसा करने से उसे मालूम हो जाएगा कि पहले दिन पढ़ाया हुआ पाठ बच्चों को कहाँ तक याद हुआ है। यदि अधिकांश बच्चे प्रश्नों के उत्तर सही नहीं लिख पाते तो वह पुनः उसी पाठ को बहुत ही सहनशीलता के साथ पढ़ाती थी।

सारे बच्चे प्रश्नों के उत्तर लिखने लगे। जब कुछ बच्चों का लिखना पूरा हो गया तब ललिता ने एक एक करके सारे बच्चों के नोट्स चेक करने लगी। हर रोज की तरह उस दिन भी रणवीर ने होमवर्क नहीं किया। ललिता की भौंहें तन गई।

उसने रणवीर की ओर देखा। सारे बच्चे प्रश्नों के उतर लिख रहे थे लेकिन रणवीर इधर-उधर देख रहा था।

दस मिनट के अंदर ही सारे बच्चों ने अपने-अपने नोट्स टीचर के टेबल पर रखकर क्लास में चले गए।

ललिता भी क्लास में आकर पढ़ाने लगी। मीठी आवाज और सरल भाषा के साथ वह जो पढ़ाती थी, बच्चे मंत्रमुग्ध होकर सुनते थे। उसकी आवाज और पढ़ाने के अंदाज में ही ऐसा जादू था जिससे बच्चे सपेरे की बीन के सामने कुंडली मारकर बैठने वाले सर्प की तरह बैठ जाया करते थे।

लेकिन रणवीर की पढ़ाई में कोई दिलचस्पी नहीं होती थी। उसे टीचर की भी परवाह नहीं थी। उस दिन क्लास के बाद ललिता ने दूसरे टीचरों से रणवीर के बारे में बात की।

उन लोगों ने कहा, ''बाप रे! उसे पढ़ाना हमारे वश की बात नहीं है। आप इस स्कूल में नई-नई आई हैं इसलिए आपको उसे और उसके माँ बाप के बारे में मालूम नहीं है। आप क्यों बेकार में झंझट मोल ले रहे हैं? वह क्लास में पढ़े या नही, उसे नजरअंदाज करके दूसरे बच्चों को पढ़ाइए। इसी में आपकी भलाई है।''

'' जब वह क्लास में पढ़ता ही नहीं तब आप लोगों ने कभी प्रिंसिपल से उसकी शिकायत नहीं की? परीक्षा में मार्क्स नहीं मिलते तब भी आप लोग उसे कुछ नहीं कहते?''

बाकी टीचरों ने एकसाथ हँसना शुरु किया।

''मार्क्स क्यों नहीं मिलेंगे उसे? जरुर मिलेंगे। आप देखते रहिए।''

ललिता को सबकुछ अजीब लगा। जब पढ़ेगा ही नहीं तब मार्क्स किस तरह मिलेंगे?'' मन में सोचते हुए उसने घर की राह ली।

दूसरे दिन स्कूल आने के बाद उसने रणवीर की तरफ ध्यान से देखा। नौवीं कक्षा में पढ़ने वाला रणवीर बहुत ही स्वस्थ था। शरीर का रंग गेहुँआ, नीली आँखे, सीधी और लंबी नाक, उम्र के अनुरूप कद, कुल मिलाकर आँखों में स्पष्ट रूप से दिखाई दे रही थी। स्कूल के दूसरे टीचरों ने ललिता को बताया कि रणवीर के माता पिता शहर के गिनेचुने रईसों में से एक है। शादी के करीब पंद्रह सालों के

बाद उन्हें रणवीर पैदा हुआ। एकमात्र सतान होने के कारण उन लोगों ने रणवीर को इतने लाड़-प्यार से पाला कि वह पूरी तरह बिगड़ गया। इतना जिद्दी हो गया कि किसी की भी बात नहीं मानता।

ललिता सोचने लगी, ''रईस माँ-बाप अक्सर अपने बच्चों को बहुत ही लाड़-प्यार से पालते हैं। और यह स्वाभाविक भी है। बच्चे जिसकी भी जिद्द करे, उसे पूरा करते है क्योंकि उनमें पैसों का बल होता है। उनके पास चाहे जितनी भी दौलत हो पर विद्या को वे खरीद नहीं सकते। लड़का नहीं पढ़ेगा तो जीवन में बनेगा क्या? नहीं, चाहे जैसे भी हो, इस लड़के को सुधारना ही होगा। ऐसा उपाय करना होगा जिससे यह लड़का पढ़ाई में मन लगा सके।''

दूसरे दिन भी रणवीर ने होमवर्क नहीं किया।

ललिता ने उसे अपने पास बुलाया तो वह पास जाकर खड़ा हो गया।

''होमवर्क क्यों नहीं किया?'' ऊँची आवाज में उसने पूछा।

''कल मैं पिक्चर देखने चला गया था इसलिए नहीं कर पाया।'' लापरवाही से जवाब दिया।

''ठीक है, कल पिक्चर देखने चला गया तो आज सुबह कर सकते थे न? कल भी आपने होमवर्क नहीं किया। अगर क्लास मैं नियमित रूप से होमवर्क नहीं करोगे तो फिर परीक्षा में मार्क्स कैसे मिलेंगे? अच्छे मार्क्स लाकर गुड् व्याय नही बनना है?'' ललिता ने प्यार से कहा।

रणवीर ललिता की बातें सुन नहीं रहा था। दूसरी और घूमकर अपने किसी मित्र को इशारे से कुछ कह रहा था।

अब चुप रहने से कोई फायदा नही हैं, ऐसा सोचकर ललिता ने चिल्लाया, ''रणवीर इधर देखो।''

रणवीर झट से ललिता की ओर मुड़ा।

''आखिर तुम्हारी समस्या क्या है? कल भी होमवर्क नहीं किया था तुमने । मेरे दिए हुए प्रश्नों का उत्तर भी नहीं लिखा। अपने आपको समझते क्या हो? मैं अगर कुछ बोल नहीं रही हूँ तो इसका मतलब यह नहीं है कि तुम अपनी मनमानी करते रहो? आज जो होमवर्क मैंने दिया है उसे कल पाँच बार लिखकर मुझे दिखाओगे। अगर होमवर्क नहीं किया तो देख लेना। अब अपनी सीट पर जाकर बैठ जाओ।'' गुस्से में चिल्लाकर कहा।

ललिता के हाथ से नोट बुक लेकर उसे तिरस्कार भरी निगाहों से देखते हुए रणवीर वहां से चला गया। अपने क्रोध को नियंत्रित करते हुए उस दिन किसी तरह पढ़ाकर ललिता चली गई।

ललिता की सख्त हिदायत के बावजूद उस दिन भी रणवीर होमवर्क करके नही लाया।

''रणवीर! तुमने निबंध क्यों नहीं लिखा?'' ललिता का पारा चढ़ा हुआ था।

''कल टी.वी. में क्रिकेट मैच देखते-देखते निबंध भूल गया।'' रणवीर में किसी प्रकार का न तो भय था और न ही संकोच । उसके जवाब में केवल लापरवाही थी।

''ठीक है, तुम एक काम करो। आज उसी निबंध को दस बार लिखकर दिखाओ। जब तक तुम यह होमवर्क नहीं करोंगे तुम्हे छुट्टी नहीं मिलेगी।'' डॉटते हुए बोली और उस दिन का पाठ पढ़ाकर दूसरे क्लास में चली गई।

समय बीतता गया।

छुट्टी की घंटी बज गई। सारे बच्चे घर जाने लगे। ललिता भी जाने लगी तो उसे रणवीर का ख्याल आया। उसने तुरंत उसे बुलाया। रणवीर ललिता के सामने आकर खड़ा हो गया।

''दिखाओं तुम्हारा होमवर्क?'' ललिता ने पूछा।

रणवीर अपने बैग से नोट बुक निकाला और ललिता के हाथ में थमाकर तेजी से चला गया।

ललिता को हँसी आ गई। 'चलो धीरे-धीरे रास्ते पर आ रहा है' ऐसा सोचते हुए घर की राह ली।

घर का काम करने के बाद रणवीर का नोटबुक निकालकर देखने लगी । होमवर्क दस बार लिखा हुआ था। ''आखिर मैं इससे होमवर्क कराने में कामयाब हुई'' सोचती हुई उसने नोटबुक को ध्यान से दुबारा देखा। उसके आश्चर्य की सीमा न थी। असलियत उसकी समझ में आ गई। वह गुस्से से काँपने लगी। 'बदमाश! धोखा और मेरे साथ? कल देखती हूँ तुझे ।'' मन में बड़बड़ाने लगी।

दूसरे दिन बहुत जल्दी ही वह स्कूल पहुँच गई। रणवीर के मित्र किशोर, नितिन और गिरीश भी पहुँच चुके थे। रणवीर उस समय तक नहीं आया था। ललिता ने उन तीनों को रणवीर का नोटबुक खोलकर दिखाया तीनों समझ गए कि उनकी चोरी पकड़ी गई। डरते हुए ललिता के सामने सिर नीचे किए खड़े हो गए।

''आप लोग ऐसा काम करोंगे तो रणवीर कैसे पढ़ेगा? आप लोग उसके मित्र है न'? क्या आप लोग नहीं चाहते कि रणवीर भी आप लोगों की तरह पढ़ाई करे और अच्छे अंकों से पास करें?''

वे तीनों चुपचाप खड़े थे।

''फिर कभी ऐसी गलती नहीं होनी चाहिए। अब आप लोग जा सकते है।'' चेतावनी देकर उसने उन तीनों को छोड़ दिया।

इतने में रणवीर पहुँचा। नोटबुक उसकी हाथ में रखते हुए ललिता ने पूछा, '' निबंध तुमने ही लिखा है?''

''हाँ।'' उसने जवाब दिया।

''लेकिन निबंध की लिखाई तो किशोर, नितिन और गिरीश की लग रही है।''

''बाप रे! टीचर ने चोरी पकड़ ली।'' वह चौंका जरुर मगर डरा नहीं। ''मैं उन्हें हमेशा चाकलेट आइसक्रीम वगैरह खिलाता रहता हूँ। अच्छे-अच्छे गिफ्ट्स भी देता रहता हूँ। उसी के बदले मैं उन लोगों ने मेरी मदद की। इसमें गलती क्या है।'' निर्लज्जता से उसने जवाब दिया।

''अच्छा तो कल फाइनल परीक्षाएं भी उन्हीं से लिखवाओगे? क्या यह संभव होगा? तुझे शिक्षा का मूल्य मालूम नही है। बेवकूफ कहीं के.... आज सारा दिन तुम डेस्क पर खड़े रहना।'' आदेश देती हुई क्लास से बाहर चली गई और दूसरी कक्षाओं के टीचरों को भी इसकी जानकारी दे दी।

बाकी टीचर ने ललिता को समझाया, ''ललिता! क्यों तुम बेकार में बात का बतंगड़ बना रही हो? मुसीबत को न्यौता दे रही हो? हमारी बात मानो और उसे छोड़ दो।''

लेकिन ललिता नही मानी, ''इस तरह सभी लोग उसे छोड़ देंगे तो उसके भविष्य का क्या होगा? बच्चों को अनुशासन सिखाना क्या हमारी जिम्मेदारी नहीं है?''

''ठीक है, तुम्हारी मर्जी।'' सबों ने कहा और अपने अपने कामों में लग गए।

दोपहर तक रणवीर उसी तरह खड़ा रहा और भोजन विराम के समय किसी को बिना बताए ही घर चला गया। जब यह बात ललिता को मालूम हुई तो वह आगबबूला हो गई।

''एकबार रणवीर के माता-पिता से बात करना जरुरी है,'' उसने सोचा। लेकिन शाम तक परिस्थिति बदल गई। रणवीर के माता पिता स्कूल पहुँच गए। --किसने हमारे बेटे को मारा है जरा बुलाइए उस टीचर को। छोटे से बच्चे को दिनभर डेस्क पर खड़ा करने की हिम्मत कहाँ से आई उसे?'' रणवीर की माँ प्रिन्सिपल पर दबाव डालने लगी।

प्रिन्सिपल समझाने लगी, ''छोड़िए न मैडम! वह टीचर नई-नई आई है। मैं पता करती हूँ।''

मगर रणवीर की माँ मान ही नहीं रही थी। ''आप क्या पूछेंगी? बुलाइए न उसे? हम पूछेंगे उससे''? उसकी आँखों में अंगारे बरस रहे थे।

प्रिन्सिपल ने ललिता को बुला भेजा। ललिता तुरंत आई।

''यही है ललिता, आपके बेटे की क्लास टीचर। ये है रणवीर के माता-पिता।'' कहकर ललिता से उनका परिचय कराया और चुपचाप वहाँ से निकल गई।

रणवीर की माँ ने ललिता को गौर से देखा। ''तो तुम्हीं हो हमारे बेटे की क्लास टीचर।तुम्हें मालूम नही है कि हमलोग कौन है? हमारे फूल जैसे बच्चे को मारने की हिम्मत कैसे की तुमने?'' चिल्लाते हुए बोली।

''मैंने मारा नहीं मैडम् ! केवल डराया था। डेस्क पर खड़ा किया था। बच्चा अगर पढ़ता नही है तो छोटी सी सजा देना क्या जुर्म है, बताइए?'' बहुत ही शांत स्वर में उसने पूछा।

''तुम्हें अगर मेरे बारे में पता होता तो इस तरह की बातें नहीं करती तुम। अपने बच्चे पर आज तक खुद मैंने चिल्लाया नहीं। कई वर्षों के बाद पैदा हुआ था मेरा बच्चा। कितने प्यार से पाल रहे हैं हम उसे। हम ही नहीं, हमारे परिवार का कोई सदस्य उसे डाँटता नहीं है। उसे किसी प्रकार की तकलीफ नहीं होने देते। मगर आज तुमने मेरे बच्चे को डाँटा। दिनभर उसे खड़ा रखा। उसके पैरों का क्या होगा, सोचा नहीं तुमने? उसका दर्द कौन सहेगा? तुम सहोगी'' वह चिल्लाती जा रही थी।

ललिता की समझ में कुछ नहीं आ रहा था। वह बोली, ''आप कैसी बाते कर रही है मैडम् ! आपके बच्चे के भविष्य के लिए थोड़ा सा डराना चाह रही थी क्योंकि वह पढ़ाई में ध्यान ही नहीं दे रहा है। अगर उसे इसी तरह छोड़ देंगे तो वह किसी काम का नहीं रह जाएगा।''

''देखो टीचर! तुम्हारा काम केवल बच्चे को पढ़ाना है, डराना धमकाना नहीं, समझी?'' रणवीर की माँ ने भौंहे तानते हुई कहा।

रणवीर के पिता ने कहा, ''देखो लड़की। मेरी पत्नी की बातें ध्यान में रखना। अबकी बार हमारे बच्चे को अगर तुमने कुछ कहा या डराया या फिर सजा देने की जुर्रत की तो तुम्हारी खैर नहीं। आया समझ में?''

''आप समझने की कोशिश कीजिए सर। अगर आपका लड़का पढ़ लिखकर एक कामयाब इंसान बनेगा तो फायदा आप लोगों का ही होगा। मेरा क्या? आज उसने दूसरे लड़कों से अपना होमवर्क लिखवाया। कल दूसरो से अपनी परीक्षाएं लिखवाएगा। ऊँची क्लासों में यह सब संभव हो पाएगा क्या? अगर अभी से रणवीर के साथ थोड़ी-सी कड़ाई से पेश आएंगी तो आगे चलकर वह सुधर जाएगा। उससे आपको ही आनन्द होगा और हमारे लिए भी गर्व का विषय होगा। लेकिन अगर आप लोग उसी की तरफदारी करते रहेंगे तो वह पूरी तरह बिगड़ जायेगा और तब नुकसान आप लोगों का ही होगा। मेरी बातों को समझने की कोशिश कीजिए। ललिता उन्हें समझाने लगी।

रणवीर की माँ उत्तेजित हो गई।

''बस बहुत हो गया। उतना तो हमें भी मालूम है। रणवीर में अभी बचपना है। बच्चे शरारत नहीं करेंगे तो क्या हम करेंगे? बड़ा हो जायेगा तो सबकुछ उसकी समझ में आ जायेगा। पहले हमें यह बताओ कि तुम्हें बच्चों को मारे बिना पढ़ाना आता है या नहीं । हमें सीख देने की जरुरत नहीं है।''

''ठीक है । बच्चा आपका है। जैसा चाहे वैसे उसकी परवरिश कीजिए।'' कहकर ललिता चली गई।

दूसरे दिन क्लास मे रणवीर ललिता को ऐसे देख रहा था जैसे उसने कोई बहुत बड़ी जंग जीत ली हो। उसे देखकर, ''गलती इसकी नहीं है, इसके माता-पिता की है। उन्हें अपनी गलती का एहसास एकदिन अवश्य होगा परन्तु तब तक बहुत देर हो चुकी होगी।'' सोचती हुई ललिता ने एक लम्बी साँस ली। उस दिन के बाद उसने फिर कभी रणवीर को कुछ नहीं कहा। दूसरे टीचरों की तरह ही उसे आजाद छोड़ दिया।

दसवीं की फाइनल परीक्षाओं के बाद रणवीर फिर किसी को दिखाई नहीं दिया। बाद मे ललिता को पता चला कि रणवीर दसवीं फेल हो गया है। धीरे-धीरे ललिता उसे पूरी तरह भूल गई।

लगभग दस सालों के बाद एक दिन ललिता अपने किसी रिश्तेदार की शादी में गई हुई थी। संयोग से वहाँ उसे रणवीर के माता-पिता दिखाई दिए। उन लोगों ने

ललिता को पहचान लिया। उनमें पहले जैसी अकड़ नहीं थी, अहंकार नहीं था।

रणवीर की माँ ने ललिता का हाथ पकड़कर क्षमा याचना की। ललिता स्तब्ध रह गई।

''यह क्या है मैडम् ? इतने सालों के बाद आप मुझसे किसलिए क्षमा माँग रही है? खैर, पहले आप यह बताइए कि रणवीर कैसा है? क्या कर रहा है'' उत्सुकतावश उसने पूछा।

''कैसे बताएं बेटी। हमारे लाड़-प्यार ने उसे शैतान बना दिया है। उस दिन अगर हम लोगों ने तुम्हारी बात सुनी होती तो शायद आज हमें ये दिन देखने को नहीं मिलते। उस समय हम अहंकार में डूबे हुए थे। तुम्हारी बातों में जो सच्चाई थी, हमें नजर नहीं आ रही थी। लेकिन अब करने को कुछ भी नहीं रह गया है। केवल पछताने के सिवाय हम कुछ भी कर सकने की स्थिति में नहीं हैं।'' कहती हुई रणवीर की माँ अपने आँसू पोछने लगी लेकिन आँसू थम नहीं रहे थे।

''वह पूरी तरह उच्छृंखल हो गया है बेटी । हमेशा अपने दोस्तों के साथ मिलकर आवारागर्दी करता रहता है। साल छः महीनों में एकबार घर आता है और हमें परेशान करता है। जब भी आता है, दस- बीस हजार माँगता है। मना करने पर हमारे ऊपर हाथ भी उठाता है। वह पूरी तरह बुरी संगति में पड़ गया है। उसे शराब की भी लत लग गई है। जब हमारे हाथ में था तब हमने नजर अंदाज कर दिया। अब वह हमारे हाथों से निकल गया है। अपने नसीब पर रोने के सिवाय हम और कर भी क्या सकते है बेटी।'' कहते-कहते रणवीर के पिता बच्चे के समान रो पड़े।

उन दोनों को इस तरह रोते हुए देखकर ललिता को भी बहुत दुःख हुआ।

''अब पछताए होत क्या, जब चिड़िया चुग गई खेत।'' मन में सोचती हुई वह घर वापस आ गई।

# पापा

**रूपल सेंगर,** पुत्री - आर.के. सिंह सेंगर
वरि.खण्ड अभि.रे.वि. लखनऊ

पापा छोटा सा है शब्द
पर इसमें बसती है
दुनिया हमारी
उनकी आँखों का डर
उनके हाथों का प्यार
उनके होठों की हँसी
उनके नाक पर बैठा गुस्सा
तो जरा सी हमारी चोट पर उनका
घबराना और फिर हमें
डाँट कर कहना कोई बात नहीं
चलो करो तुम कर सकते हो।
वो मूछों पर ताव देना
वो मेरे दर्द में अपने दर्द को छुपाना
कहते हैं उसे घर का मुखिया
मगर वो रहता है सब का रखवाला
इसीलिए तो है ये मेरा कहना
वो हैं मेरे पापा
पापा कहते है
बेटों के लिए पहले हीरो
होते हैं पापा
और बेटियों के लिए पहला प्यार होते
है पापा।

जब-तक आपके पास राष्ट्रभाषा नहीं है,
आपका कोई राष्ट्र भी नहीं है।
**- डॉ. राजेन्द्र प्रसाद**

# तू कौन.....मैं खामखाह.....

**(लघु कथाएं)**

**पंकज शर्मा**

''ये  बैग किसका है भाई'' एक यात्री ने पूछा। बैठे हुए यात्री ने बैग पर हाथ रख दिया, '' मेरे साथी का है।''

दूसरा यात्री बोला, इसको उठाकर गोद में रख लो या ऊपर रख दो, हमने बैठना है।'' बैठे हुए यात्री ने फिर कहा, ''पर यहां तो मेरा साथी बैठा हुआ है।''

''कहाँ है तुम्हारा साथी?'' तीसरा बोला पड़ा।

''नीचे है अभी आ रहा है।'' बैठा यात्री बोला।

पहले यात्री ने बैग को उठाने की कोशिश करते हुए कहा, '' जब आएगा तो बैठ जायेगा, फिलहाल तो हमें बैठने दो, हटाओ बैग।''

''नहीं उठाता  बैग, जब कह रहा हूँ कि मेरे साथी की सीट है, वह अभी आ रहा है..आप लोग कोई और सीट नहीं देख सकते क्या?'  बैठे यात्री को थोड़ा ताव आ गया।

'' तो हमने क्या कहा है? आएगा तो बैठ जाएगा.... और न आया तो.....यूं भी कई बार सीट को रोक कर बैठ जाते हैं, किसी को बैठने नहीं देते... हम तो रोज ही ऐसे देखते रहते है, रोज ट्रेन से ही चलते है... हटा बैग को'' एक और यात्री बोल पड़ा।

'' नही हटाता, क्या कर लेगा?'' बैठा यात्री अकड़ पड़ा।

इतना सुनना था कि सभी खड़े यात्री के साथ झगड़ा करने लगे, बात बढ़ गई, यहां तक कि नौबत हाथापाई तक पहुँच गई और..... खड़े हुए यात्रियों में एक ने बैठे हुए यात्री के दो-चार थप्पड़ तक जमा दिए।

अभी यह सब चल ही रहा था कि बैठे हुए यात्री का साथी वहां आ पहुँचा.... और अपना बैग उठा कर चुपचाप वहां से चल दिया। बैठा हुआ यात्री आश्चर्यमिश्रित भावों से उसे देखते हुए स्वयं से ही कहा उठा, 'तू कौन .... मै खामखाह....।''

## तुलना

''पिताजी, हम बच्चों में से कौन आपके लिए सबसे अच्छा है और कौन कम?'' एक ने सवाल किया।

पिता ने प्यार से बच्चे की तरफ देखा और कुछ क्षण सोचकर प्रति प्रश्न किया, '' पहले तुम लोग यह बताओ कि क्या तुम हम दोनों यानि तुम्हारी मां और मुझमें से बता सकते हो कि कौन तुम्हें ज्यादा अच्छा लगता है। और कौन कम?''

''नहीं पिता जी, हमें तो आप दोनों ही बराबर के अच्छे लगते हैं। एक दूसरे से तो हम आप दोनों की तुलना कर ही नहीं सकते'',  बच्चे ने जवाब दिया।

बच्चों के पिता जी मुस्कुराए, '' बस इसी तरह बेटा, हम दोनों के लिए भी तुम सब बराबर हो, कोई अच्छा या बुरा  कम या ज्यादा नहीं है। खास कर तुम्हारी मां के लिए, जिसने तुम सबके जन्म से लेकर पालने-पोसने तक एक सा कष्ट सहा है।''

बच्चा समझ गया था कि इन रिश्तों की कभी कोई तुलना नहीं की जा सकती है।

भारत के विभिन्न प्रदेशों के बीच हिन्दी-प्रसाद के द्वारा एकता स्थापित करने वाले लोग सच्चे भारतबन्धु हैं।

**- महर्षि अरविन्द**

जिस देश को अपनी भाषा और अपने साहित्य के गौरव का अनुभव नहीं है, वह उन्नत नहीं हो सकता।

**- डॉ. राजेन्द्र प्रसाद**